उड्डीशतन्त्रम्

* श्रीहरि *

रावणकृत

उड्डीशतन्त्रम्

भाषा टीका सहितम्

*

भाषान्तर कर्ता

प्रह्लाददास भरतिया

*

प्रकाशक

गोवर्द्धन पुस्तकालय,

मथुरा

मूल्य १)२५

अथोड्डीशतंत्रम्

भाषाटीकासहितम्

ग्रन्थोपक्रमः

कैलासशिखरे रम्ये नानारत्नोपशोभिते ।।
नानाद्रुमलताकीर्णे नानापक्षिरवैर्युते ।।१।।

अनेक प्रकार के रत्नों से शोभायमान विभिन्न प्रकार के वृक्ष और लताओं से घिरा हुआ और नाना भाँति के पक्षियों के शब्दों मे शब्दायमान ऐसा एक कैलाश पर्वतका अत्यंत रमणीक शिखिर है ।१।

वसन्तकुसुमामोदमोदिते सुमनोहरे ।।
शैत्यसौगन्ध्यमान्द्याढयैर्मरुद्भिरुपवीजते ।।२।।

जहाँ वसन्त ऋतु के प्रफुल्लित फूलों की सुगन्धि से सर्वत्र सुगन्धित होने के कारण मन आनन्दित हो जाता है तथा इस मनोहर स्थान में सुगन्ध युक्त शीतल मन्दर पवन सदा बहता रहता है ।।२।।

अप्सरोगणसंगीतकलध्वनिनिनादिते ।
स्थिरच्छायाद्रुमच्छादितेस्निग्धमंजुले ।।३।।

और जो अप्सराओं के समूह के संगीत की सुन्दर ध्वनि से शब्दायमान हो रहा है एवं घनी छाया वाले वृक्षों के चारों तरफ से घिरा हुआ है ऐसा वह कैलाश का शिखिर अत्यन्त मनोहर और शोभायमान हो रहा है ।।३।।

मत्तकोकिलसन्दोहसंघुष्टविपिनान्तरे ।
सर्वदा स्वगणैः सार्धमृतुराजनिषेविते ।।४।।

जिसका वन मध्य प्रदेश प्रमत्त कोकिला समूह के मधुर कूकों से कूजित हो रहा है और जहाँ ऋतुराज वसन्त सदा अपने सहकारियों के संग जिसकी सेवा में लगा हुआ है ।।४।।

सिद्धचारणगन्धर्वगाणपत्यगणैर्वृते ।
तत्र मौनधरंदेवं चराचरजगद्गुरुम् ।।५।।

जो सिद्ध, चारण, गंधर्व और गाणपत्य आदि शिवगणों से सर्वदा घिरा रहता है, वहाँ (उस कैलाश शिखिर पर) चराचर जगत् के गुरु श्री महादेव मौन धारण किये हुए बिराजमान हैं ।।५।।

सदाशिवं सदानन्दं करुणामृतसागरम् ।
कर्पूरकुन्दधवलं शुद्धसत्वमयं विभुम् ।।६।।

वे सदाशिव (कल्याणदाता) श्रीभगवान् महादेव नित्यानन्द स्वरूप करुणारूप अमृतके समुन्द्र कपूर तथा कुन्दपुष्प तुल्य श्वेतवर्ण, शुद्धसत्त्वस्वरूप और सर्वव्यापक हैं ।।६।।

दिगंवरंदीननाथं योगीन्द्रं योगिवल्लभम् ।
गंगाशीकरसंसिक्तं जटामण्डलमण्डितम् ।।७।।

तथा दिगम्बर (दश दिशामय वस्त्र पहिने हुए) दीनों के नाथ, योगिराज योगियों के प्रिय,तथा गागजी की तरंगों से अभिषिक्त एवं जटा समूह से सुशोभित हो रहे हैं ।।७।।

विभूतिभूषितं शान्तं व्यालमालं कपालिनम् ।
त्रिलोचनंत्रिलोकेशं त्रिशूलवरधारिणम् ।।८।।

जिनके सर्वाङ्ग में भस्म सुशोभित हो रही है अत्यन्त शान्तस्वरूप हैं और गले में सर्प की माला तथा मुण्डमाला धारण कियेहुये हैं तथा

वेत्रिलोचन, त्रिलोकीनाथ हाथमें त्रिशूल और वरमुद्रा धारणकियेहुए हैं

आशुतोषंज्ञानगम्यंकैवल्यफलदायकम् ।

निर्विकल्पं निरातंकंनिर्विशेषंनिरंजनम् ।।९।।

और आशुतोष (शीघ्र प्रसन्न हो जाने वाले) ज्ञान स्वरूप फल मोक्ष दाता, भेदभ्रम रहित, ताप त्रय से अबाधित, निर्विशेष, निरंजन (निर्दोष) स्वरूप हैं ।।९।।

सर्वेषांहित कर्तारं देवदेवं निरामयम् ।

अर्द्ध चन्द्रोज्ज्वलद्भालंपंचवक्त्रंसुभूषितम् ।।१०।।

तथा सब प्राणिमात्र के हित करने वाले देवताओं के भी देवता निरामय(रोग रहित) अर्द्ध चन्द्रमा की चन्द्रिका जिनके भालपर चमक रही है ऐसे वे पंचानन शिवजी कैलाश पर्वत पर विराज रहे हैं

प्रसन्नवदनं वीक्ष्य लोकानां हितकाम्यया ।

विनयेनसमायुक्तोरावणः शिवमब्रवीत् ।।११।।

ऐसे उन सदाशिव भगवान को प्रसन्नमुख देखकरलोकों के हित की इच्छासे विनम्र होकर लंकाधिपति रावण शिवजी से पूछने लगा।

अथ ग्रन्थारम्भः

रावण उवाच

नमस्ते देवदेवेश सदाशिव जगद्गुरो ।

तन्त्रविद्या क्षणंसिद्धि कथयस्वममप्रभो ।।१।।

रावण बोला हे देवदेवेश्वर ! हे सदाशिव ! हे जगद्गुरो ! प्रभो ! आपको मेरा प्रणाम है अब आप क्षण मात्र में सिद्धि देने वाली मन्त्रविद्या मुझे बताइये ।।१।।

ईश्वरो उवाच

साधुपृष्टं त्वयावत्स लोकानां हितकाम्यया ।

उड्डीशाख्यमिदंतंत्रं कथयामि तवाग्रतः ॥२॥

महादेवजी ने कहा कि हे पुत्र ! लोगों के हित की इच्छा के कारण तुमने यह बहुत अच्छा पूछा । अतः अब मैं तुम्हारे सामने उड्डीश नामक तन्त्र को कहूंगा । २॥

पुस्तके लिखता विद्यानैव सिद्धिप्रदा नृणाम् ।
गुरुं विनाऽपिशास्त्रेऽस्मिन् नाधिकारः कथञ्चन।३।

गुरु के बिना बताये पुस्तक में लिखी हुई विद्या मनुष्यों को सिद्धिदायक नहीं होती और इस तन्त्र शास्त्र में तो बिना गुरु के उपदेश के कभी किसी को अधिकार है ही नहीं ॥३॥

अथाभिधास्येशास्त्रेऽस्मिन्सम्यक्षट्कर्मलक्षणं ।
तंत्रमंत्राऽनुसारेण प्रयोगफलसिद्धिदम् ॥४॥

अब मैं इस शास्त्र में सम्यक् तथा उन षट् कर्मोंके लक्षणों को कहता हूँ जिनतन्त्रमंत्रोंकेविधिवत् करनेपर प्रयोग फलकी सिद्धि प्राप्त होती है।

अथ षट्कर्माणि

शांतिवश्यस्तंभनानि विद्वेशोच्चाटनं तथा ।
मारणांतानि शंसंति षट्कर्माणि मनीषिणः ॥५॥

शान्ति कर्म, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषक्त, उच्चाटन और मारण इन छः प्रयोगों को विद्वान् लोग षट्कर्म नाम से कहते हैं।।५।

अथ षट्कर्मणां लक्षणम्

रोग कृत्याग्रहादीनां निराशःशान्तिरीरिता ।
वश्यंजनानां सर्वेषां विधेयत्व मुदीरितम् ॥६॥
प्रवृत्तिरोधः सर्वेषां स्तम्भनं समुदाहृतम् ।

स्त्रीपुंसांद्वेषजननं मिथो विद्वेषणं मतम् ।।७।।
उच्चाटनं स्वदेशादेर्भ्रंशनं परिकीर्तितम् ।
प्राणिनां प्राणहरणं मारणं समुदाहृतम् ।।८।।

षट्कर्मों के लक्षण ये हैं कि जिससे रोग कृत्या (जादू टोना) और ग्रह आदि की शान्ति होती है उसको शान्ति कर्म कहते हैं और जिस कर्म से सब प्राणियों को वश में किया जाता है। उसे वशीकरण कहते हैं ।।६।। तथा जिससे प्राणियों की प्रवृत्ति को रोक दिया जाय उसको स्तम्भन कर्म कहते हैं, तथा पति पत्नी या दो स्त्री स्त्रियों की दो पुरुष पुरुषों की परस्पर प्रीति छुड़ादी जाय उसका नाम विद्वेषण है, ।।७।। और जिसके द्वारा किसी प्राणी को उसके निवास स्थान से पृथक् कर दिया जाय उसका नाम उच्चाटन है. तथा जिस कर्म के द्वारा प्राणियों के प्राण नष्ट कर दिये जायँ उसे मारण कहते हैं ।।८।।

ग्रन्थेऽस्मिन् कर्षणंचादौ द्वितीयोन्मादनंतथा ।
विद्वेषणं तृतीयं च चतुर्थोच्चाटनं तथा ।।९।।
ग्रामस्योच्चाटनं पंचजलस्तंम्भश्च षष्ठकम् ।
स्तंभनं सप्तमं चैव वशीकरणमष्टमम् ।।१०।।
अन्यानपि प्रयोगांश्च बहून शृण्वसुराधिप ।
अंधीभावो मूकभावो गात्रसंकोचनं तथा ।।११।।

इस ग्रन्थ (उडडीश तंत्र) में पहिला भूतकर्षण दूसरा उन्मादन, तीसरा विद्वेषण, चौथा उच्चाटन, ।।९।। पाँचवाँ गाँव का उच्चाटन, छठा जल स्तम्भन, साँतवाँ सर्वस्तम्भन, आठवाँ वशीकरण ।१०। इसी प्रकार और भी अनेकप्रयोग हैं उन्हें हे असुराधिप! (रावण) तुम सुनो जैसे अंधीकरण, जैसे मूकोकरण, तथा गात्रसङ्कोचन ।।११।।

बधिरोलूककरणे भूतज्वर कृतिस्तथा ।

मेघानां स्तंभनंचैव दध्यादिक विनाशनम् ।।१२।।
मत्तोन्मत्त करंचैव गजवाजि प्रकोपनम् ।
आकर्षणं भुजंगानां मानवानां तथैवच ।।१३।।
शस्यादिनाशनं चैव परग्राम प्रवेशनम् ।
वेतालादिक सिद्धिश्च पादुकांजनसिद्धयः ।।१४।।

वधिरीकरण, लूककरण, तथा भूतज्वरकरण, मेघस्तम्भन, दधि आदिक वस्तुओं का नाश करना ।।१ ।। मत्त करण, हाथी घोड़ों का प्रकोपन और सर्पों का आकर्षण मनुष्यों का आकर्षण ।।१३।। अन्न आदिक का नाश तथा दूसरे ग्राम में प्रवेश और वेताल आदि की सिद्धि और पादुका तथा अंजन सिद्धि ।।१४।।

कौतुकंचेन्द्रजालं च यक्षिणीमंत्र साधनम् ।
गुटिका खेचरत्वं च यक्षिणीमंत्र साधनम् ।।
गुटिका खेचरत्वं च मृतसंजीवनादिकम् ।।१५।।
अन्यान्बहूंस्तथारौद्रान्‌विद्यामंत्रांस्तथापरम् ।
औषधंच तथा गुप्तं कार्यवक्ष्यामि यत्नतः ।।१६।।
उड्डीशंयो न जानाति स रुष्टः किं करिष्यति ।
मेरुं चालयतेस्थानात्सागरं प्लावयेन्महीम् ।।१७।।

कौतुक—इन्द्रजाल, दक्षिणी मन्त्र साधन, गुटिका सिद्ध, शून्य मार्ग जाना, तथा मृतसंजीवनी विद्या आदि ।१५। तथा और भी अनेक प्रयोग हैं जैसे रौद्रविद्या तथा औषधियों द्वारा होने वाले जो अनेक गुप्त कार्य उन्हें भी यत्न पूर्वक कहूँगा ।।१६।। जो पुरुष उड्डीशतन्त्र नहीं जानता है वह क्रोध करके भी क्या कर सकता है, यह उड्डीश-तन्त्र मेरु पर्वत को स्थान से डिगा देने वाला तथा समुद्र को भी भूमि में सुखाकर लय कर देने वाला है ।।१७।।

अकुलीनोऽधमोऽबुद्धिर्भक्तिहीनःक्षुधान्वितः ।
मोहितः शंकितश्चापि निन्दकश्च विशेषतः ॥१८॥
अभक्ताय न दातव्यं तंत्रशास्त्रमिदमुत्तमम् ॥
तथैतस्सह संयोगः कार्योनोड्डीशंकैर्ध्रुवम् ॥१६॥

जो मनुष्य सत्कुलोत्पन्न न हो, बुद्धिभ्रष्ट हो भक्ति रहित तथा क्षुधा युक्त हो, या जो मोहित व शङ्कित अथवा विशेष निन्दक हो ॥१८॥ तथा जो मनुष्य तन्त्र शास्त्र में श्रद्धा न रखता हो ऐसे मनुष्यों को इस उत्तम तन्त्रशास्त्र को न दे और न इन सबों के साथ उड्डीश-तन्त्र वाले को संपर्क ही करना चाहिये ॥१६॥

यदि रक्षेत्सिद्धिमेतामात्मानं च तथैव च ।
देवता गुरुभक्ताय दातव्यं सज्जनायच ॥२०॥
तपस्विबालवृद्धानां तथा चैवोपकारिणाम् ।
निश्चयेसुमतिं प्राप्ययथोक्तं भाषितानिच ॥२१॥

भाषार्थ—यदि इस तन्त्र विद्या की सिद्धि और अपनी आत्मा की रक्षा करना चाहे तो इस तन्त्र विद्या को देवता और गुरु भक्त किसी सज्जन के लिए ही दे ॥२०॥ अथवा किसी तपस्वी, बालक (विद्यार्थी) वृद्ध पुरुष उपकार करने वाले एवं तन्त्र विद्या में विश्वास रखने वाले और जो वास्तवमें सत्यवादी हैं उनको यह तन्त्रविद्या दे ।

नतिथिर्न च नक्षत्रं नियमोनास्ति वासरः ।
न व्रतंनियमोहोमः कालवेलाविवर्जितम् ॥२२॥
केवलं तंत्रमात्रेण ह्यौषधि सिद्धि रूपिणी ।
यस्य साधनमात्रेण क्षणात्सिद्धिश्च जायते ॥२३॥

उडडीशतन्त्र में कहे हुए प्रयोगों के करने में न तिथि का

नियम है, न नक्षत्र का और न वार न व्रत और न हवनकानियम है और न समय का ही कुछ नियम है ॥२२॥ इसमें तो केवल तन्त्र-मन्त्र से ही सब औषधियां सिद्धि रूपिणी हैं, जिनके साधन मात्र से ही क्षण में सिद्धि प्राप्त होती है ॥२३॥

शशिहीनायथारात्री रविहीनं यथादिनम् ।
नृपहीनं यथाराज्यं गुरुहीनं न मंत्रकम् ॥२४॥

बिना चन्द्रमा के जैसे रात्रि, सूर्य बिना जैसे दिन, राजा बिना जैसे राज्य, उसी प्रकार बिना गुरु के मन्त्र सिद्धि नहीं होती है ॥२४॥

इन्द्रस्य च यथा वज्रं पाशश्चवरुणस्य च ।
यमस्य च यथादंडोवह्नेःशक्तिर्यथा दहेत् ॥२५॥

जैसे इन्द्र का वज्र, वरुण का पाश, यम का दण्ड और अग्नि की शक्ति जला देती है ॥२५॥

तथैवैते महायोगः प्रयोज्याः शस्तकर्मणे ।
सूर्यं प्रतापयेद्भूमौ नेदं मिथ्या भविष्यति ॥२६॥
अपकारिषु दुष्टेषु पापिष्टेषु जनेषु च ।
प्रयोगैर्हन्यमानेषु दोषो नैव प्रजायते ॥२७॥
योजयेदनिमित्तं य आत्मघाती न संशयः ।
असन्तुष्टः प्रयोगे यः शास्त्रमेतन्न सिद्धिदम् ॥२८॥

इन महा प्रयोगों का ऐसे ही उत्तम कर्मों में प्रयोग करना चाहिये, इन प्रयोगों के प्रभाव से सूर्य को भी भूमि पर गिरा सकता है, इसमें मिथ्या नहीं है ॥२६॥ अपकारी दुष्ट और पापियोंको मारण प्रयोगके द्वारा मारनेसे दोष नहीं लगताहै और जो पुरुषबिना प्रयोजन के ही प्रयोग करताहै वह निःसंदेह।२७। आतमघातीहै औरजोप्रयोगकरने में विश्वास नहीं रखता उसको यह तंत्रशास्त्र सिद्धिप्रद नहीं होता।

अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं मारणाभिधम् ।
सद्यः सिद्धिकरं नृणां शृणु रावण यत्नतः ॥२९॥

श्री शिवजी बोले कि अब आगे मैं मारण प्रयोग का वर्णन करता हूँ जो मनुष्यों को शीघ्र सिद्धि देने वाला है अतः हे रावण ! तुम यत्न से सुनो ॥२९॥

मारणं न वृथाकार्यं यस्य कस्य कदाचन ।
प्राणांतसंकटे जाते कर्तव्यं भूतिमिच्छता ॥३०॥

यह मारण प्रयोग प्रत्येक पर नहीं करना चाहिये, प्राणांतसंकट उपस्थित होने पर ही अपने कल्याण के लिए विधि पूर्वक प्रयोग चाहिये ॥३०॥

मूर्खेण तु कृतौ तंत्रे स्वस्मिन्नेव समापयेत् ।
तस्माद्रक्ष्यंसदात्मानंमारणं न क्वचिच्चरेत् ॥३१॥

अज्ञानता के कारण मूर्ख मनुष्य से किया हुआ मारण प्रयोग उल्टा अपनेही ऊपर आता है अतः अपनी आत्मा की सदा रक्षा चाहने वाले पुरुष को मारण प्रयोग कभी नहीं करना चाहिये ॥३१॥

ब्रह्मात्मानं तु विततं दृष्ट्वा विज्ञानचक्षुषा ।
सर्वत्रामारणं कार्यं मन्यथा दोषभागभवेत् ।
कर्तव्यं मारणं चेत्स्यात्तदा कृत्यं समाचरेत् ॥३२॥

ब्रह्मज्ञानी पुरुष तो विज्ञान दृष्टि से सर्वत्रब्रह्म को ही व्याप्त हुआ देखता है अतः उसेतो मारण प्रयोग कभी करना ही नहीं चाहिये अन्यथा वह दोष का भागी होता है और जो अत्यन्त आवश्यक कार्य के लिए प्रयोग करना हो तो इस प्रकार करे ॥३२॥

रिपुपादतलात्पांसंगृहीत्वा पुत्तलीं कुरु ।

चिता भस्मसमायुक्तां मध्यमारुधिरान्विताम् ।।३३

प्रयोग करने वाले को चाहिये कि वह अपने शत्रु के दोनों पैरों के तले की मिट्टीले और उसकी एक पुतली बनावे औरउस मनुष्याकार पुतलीमें चिताकी भस्मलगावे और फिरअपनी बीचकी अँगुली का रुधिर उस मिट्टीकी बनाई हुई पुतलीको बीचकी अँगुलीमें भर दे।

कृष्णवस्त्रेण संवेष्टच कृष्णसूत्रेण बन्धयेत् ।
कुशासने सुप्तमूर्तिर्दीपं प्रज्ज्वालयेत्ततः ।।३४।।

फिर उस पुतली को काले कपड़ा से लपेट कर काले सूत से बाँध दे और उस मूर्ति को कुश के आसन पर शयन कराकर दीपक प्रज्वलित करदे और फिर ।।३४।।

अयुतं प्रजपेन्मंत्रं पश्चादष्टोत्तरं शतम् ।
मंत्रराजप्रभावेण माषांश्चाष्टोत्तरं शतम् ।।३५।।

मन्त्र का दशसहस्र बार जप करे और पुनः एक सौ आठ बार जप अनंतर मंत्र पढ़ता जाय और एकसौ आठ काले उड़द लेकर।३५।

पुत्तलीमुखमध्ये च निक्षिपेत्सर्वमाषकान् ।
अर्धरात्रिकृते योगे शक्रतुल्योऽपि मारयेत् ।।३६।।
प्रातःकालेपुत्तलिकांस्मशानान्तेविनिक्षिपेत् ।
मासात्मकप्रयोगेण रिपोर्मृत्युर्भविष्यति ।।३७।।

अथ मारण मन्त्र

ॐ नमः सर्वकालसंहाराय । अमुकं हन हन क्रीं फट् भस्मीकुरु स्वाहा ।।

उन सब एक सौ आठों को मूर्ति के मुख में भर दे। यह प्रयोग आधी रात के समय किया जाय तो इन्द्र के समान शत्रु को भी मार

देता है, प्रातःकाल होते ही उस पुतली को श्मशान में गाढ़ दे, एक मास तक इस प्रयोग के करने से शत्रु की मृत्यु हो जाती है ॥३७॥ शत्रु के मारण का मन्त्र यह है कि—ॐ नमः सर्वकाल संहाराय अमुकं हन हन क्रीं फट् भस्मी कुरु स्वाहा॥ यहाँ अमुक स्थान पर शत्रु का नाम उच्चारण करना चाहिये ॥३८॥

निम्बकाष्ठं समादाय चतुरंगुलमानतः।
शत्रु केशान्समालिप्य ततोनाम समालिखेत् ॥
चितांगारे च तन्नाम्ना धूपं दद्यात्समाहितः।
त्रिरात्रं सप्तरात्रं वा यस्य नाम उदाहृतम् ॥३९॥
कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यामष्टोत्तरशतं जपेत्।
प्रेतो गृह्णातितच्छीघ्रं मंत्रणानेन मंत्रवित् ॥४०॥

अथ मंत्रः

ॐ नमो भगवते भूताधिपतये विरूपाक्षाय घोर दंष्ट्रिणे विकरालिने ग्रहयक्ष भूतेनानेन शंकरअमुकं हन हन दहदह पच पच गृह्ण गृह्ण हुं फट्ठःठः ॥

नीम के वृक्ष की चार अंगुल के प्रमाण की एक कील ले और उसपरशत्रु के सिर के वालों को लपेटले और शत्रु का नाम लिखे३८। तीन रात्रि अथवा सात रात्रि तक चिता के कोयले को अग्नि पर उस कील को लिखर कर सावधानता पूर्वक धूप देता रहे इस तरह तीन रात या सात रात तक ॥३९। कृष्ण पक्ष की अष्टमी से लेकर कृष्ण चतुर्दशी पर्यन्त प्रतिदिन 'अमुकं' की जगह शत्रु का नाम उच्चारण करता हुआ एक सौ आठ बार मन्त्र को जपे तो मन्त्र के प्रभाव से मन्त्रवेत्ता प्रेत शत्रु को शीघ्र ही ग्रहण कर लेता है ॥४०॥ मन्त्र ॐ नमो भगवते भूताधिपतये' इत्यादि ॥४०॥

नरास्थिकीलकं पुष्ये गृहीत्वाच्चतुरंगुलं ।
निखनेत्तु गृहे यावत्तावत्तस्सकुलक्षयः ।।४१।।
मंत्रः।। ॐ ह्रीं फट् स्वाहा। अयुतजप त्सिद्धिः।।

पुष्य नक्षत्र के दिन मनुष्य के हाड़ को चार अंगुलकी एक कील लेकर वह जिसके घर में गाढ़ दी जावेगी और जब तक वह गढ़ी रहेगी तब तक उस कुल का नाश हो जायेगा ।।४१।। ओं ह्रीं फट् स्वाहा, यह मन्त्र है दस हजार बार जपने से यह सिद्ध हो जाता है ।

तथा च ॐ सुरेश्वरायस्वाहा

सर्पास्थ्यंगुलमात्रं तु चाश्लेषायां रिपोर्गृहे ।
निखनेच्छतधा जप्तं मारयेद्रिपुसन्ततिम् ।।४२।।

प्रयोग करने वाला मनुष्य साँप के हाड़ की चार अंगुल की कील को आश्लेषा नक्षत्र में 'ॐ सुरेश्वराय स्वाहा' इस मन्त्र के एक सौ आठ बार जप से अभिमन्त्रित करके जिस शत्रु के घर में गाढ़ दे तो उस शत्रु की सन्तति का नाश हो ।

अश्वास्थिकीलमश्विन्यां निखनेच्चतुरंगुलम्, शत्रुगेहे निहन्त्याशु कुटुम्बं बैरिणां कुलम् । मंत्र ।। हुँहुँ फट् स्वाहा ।। सप्तदशवारमभिमंत्रितं कृत्वा निखनेत्।।

घोड़े के हाड़ की चार अंगुल कीनाप की एक कील अश्विनी नक्षत्र के दिन लेकर बैरी के घर में गाढ़ दे तो शीघ्र ही शत्रु के कुल का नाश हो ।।४३।। हुँ हुँ फट् स्वाहा । इस मन्त्र से सत्रहबार कील को अभिमन्त्रित करके गाढ़े ।

आर्द्रायां निम्बबन्दाकं शत्रोः शयनमन्दिरे ।
निखनेन्मृतवच्छत्रु रुद्धृते च पुनः सुखी ।।४४।।

तथाशिरीषबन्दाकं पूर्वोक्तेनोड्डुनाहरेत् । शत्रोर्गेहे स्थापयित्वा रिपोर्नाशो भविष्यति । हुँ हुँफट्स्वाहा एकविंशतिवारमभिमंत्रितं कृत्वा निखनेत् ।

आर्द्रानक्षत्र के दिन नीम के वृक्ष के बांदा को लेकर शत्रु के सोने के घर में गाढ़ दे तो शत्रु मृतक तुल्य हो जाय और उखाड़ लेने पर पुनः सुखी हो जाय ।।४४।। तथा सिरस वृक्ष के बादा को यदि पूर्वोक्त (आर्द्रा) नक्षत्र में लाकर शत्रु के घर में गाढ़ दे तो शत्रु का नाश हो ।।४५।। हुँ हुँ फट् स्वाहा' आदि मन्त्र से इक्कीस बार पहिले उस कील को अभिमन्त्रित कर लेना चाहिये ।

तथाच

ॐ डंडांडिंडीडुंडूंडेंडैंडोंडौंडंडः अमुकं गृह्णगृह्ण हुँ हुँ ठःठः । अनेन मंत्रेण नरास्थिकीलकंसहस्राभिमन्त्रितं कृत्वा चितामध्ये निखनेत् स ज्वरेण नश्यति ।।४६।। तथापूर्वोक्तमंत्रेण मनुष्यास्थिकीलकंसहस्रमभिमंत्रितं कृत्वा यस्य गृहे निखनेत् नाशःस्यात् ।

ॐ डंडाडिडी इत्यादि मन्त्र से मनुष्य के हाड़ की कील को एक हजार बार अभिमन्त्रित करके जिसका नाम लेकर चिता के बीच में गाढ दे तो वह ज्वर से बाधित होकर मर जाता है ।।४६।। तथा पहिले कहे हुए डंडांडिडी आदि मन्त्र जप द्वारा मनुष्य के हाड़ की कील को हजार बार अभिमन्त्रित करके जिस शत्रु के घर में उसका नामोच्चारण करके गाढ़दे अथवा श्मशान में आधीरात के समय गाढ दे तो उसका नाश हो ।।४७।।

रिपुविष्ठांबृश्चिकं च खनित्वातु विनिःक्षिपेत् ।

आच्छाद्यावरणेनाथ तत्पृष्ठे मृत्तिकां क्षिपेत् म्रियते मलरोधेनं उद्धृते च पुनः सुखी ॥४९॥

बैरी की विष्टा और बीछू इन दोनों को एक पात्र में रखकर और ऊपर से दूसरे पात्र से ढक कर उसे पृथ्वी में गाढ़ दे और उसके ऊपर मिट्टी डाल दे ॥४८॥ तो वह शत्रु मलके रुकने से पीड़ित होता हुआ मृत्यु तुल्य कष्ट प्राप्त करे और उसके उखाड़ लेने पर उसे फिर आराम हो जाय ॥४९॥

तथाच

शत्रु पाद तलात्पांसुं गृह्णीयाद्भौमवासरे ।
गोमूत्रेणतु सिञ्चित्वा प्रतिमांकारयेद्द्विशः ॥५०॥
निर्जने च नदीतीरे स्थापयेत्स्थंडिलोपरि ।
लोहशूलं च निखनेत्तद्वक्षसि सुदारुणम् ॥५१॥
तद्वामे भैरवं कृष्णं बलिभिः प्रत्यहं यजेत् ॥५२॥

मङ्गलवार के दिन शत्रु के पैर के नीचे की मिट्टी लेकर और उसे गौ मूत्र में सान कर उसी शत्रु के नाम की एक पुतली बनावे।५०। और फिर उसे किसी निर्जन स्थान में नदी के तट पर वेदी बनाकर उस पर मूर्ति को स्थापित करे फिर उस पूर्ति की छाती पर अत्यन्त पैनी धार वाले त्रिशूल को गाढ़ दे ॥५१॥ और उसकी बाँई तरफ उसी स्थंडित पर कालभैरव को स्थापित कर उसकी प्रतिदिन यथोक्त विधि से बलिदान और पूजा करता रहे ॥५२॥

एकादशबटुंस्तत्र परमान्नेन भोजयेत् ।
अखंडदीपं तस्याग्रे कटुतैलेन ज्वालयेत् ॥५३॥
व्याघ्रचर्मासनं कृत्वा निवसेत्तस्य दक्षिणे ।

दक्षिणाभिमुखोरात्रौ जपेन्मंत्रमतन्द्रितः ॥५४॥

उस जगह ग्यारह ब्राह्मण बालकों को खीर से भोजन करावे और उस कालभैरव के सम्मुख कडुवे तेल का एक अखण्ड दीपक जलावे ॥५३॥ और उस बैरी की प्रतिमा के दक्षिण हाथ की तरफ व्याघ्र चर्म बिछाकर उस पर स्वयं आप दक्षिण मुख करके बैठ जाय रात्रि के समय निरालस्यता से सावधानतापूर्वक मंत्र का जप करे॥५४

मंत्रस्तु ॐ नमो भगवते महाकालभैरवाय कालाग्नितेजसे अमुकं मे शत्रुं मारय मारय पोथय पोथय हुँ फट् स्वाहा। अयुतं प्रजपेदेनं मंत्रंनिशि समाहितैः ॥ एकोनत्रिंशद्दिवसैर्मारणं जायतेध्रुवम् ॥५५॥

'ॐ नमो भगवते' इत्यादि मन्त्र को दस हजार बार जपे रात्रि के समय सावधान होकर इस मन्त्र के जपने से उन्नीसवें दिन में यह मारण प्रयोग सिद्ध हो जाता है ॥५५॥

तथाच आर्द्रपटीविद्या

अथ तत्रादौ मंत्रः। ॐ नमो भगवति आर्द्रपटेश्वरि हरितनीलपटे कालि आर्द्रजिह्वे चांडालिनिरुद्राणि कपालिनि ज्वालामुखिसप्तजिह्वे सहस्त्रनयने एहि एहि अमुकं ते पशुंददामि अमुकस्य जीवनं निकृंतय एहि तज्जीवितहारिणि हुँ फट् भूर्भुवः स्वः फट् रुधिरार्द्रबसाखादिनि मम शत्रुन् छेदय छेदयशोणित पिव पिव हुँ फट् स्वाहा ॥

अब मारण सम्बन्धी आर्द्रपटी विद्या का वर्णन किया जाता

है। उसका मन्त्र 'ॐ नमो भगवति आर्द्रपटेश्वरि' इत्यादि मूल में है इस मंत्रमें अमुक के स्थान पर शत्रु का नाम उच्चारण करना चाहिये

ॐ अस्य श्री आर्द्रपटीमहाविद्यामंत्रस्यदुर्वासाऋषिर्गायत्री छन्दः, हुँ बीजं, स्वाहा शक्तिः, ममामुकशत्रु निग्रहार्थे जपे विनियोगः ॥

हाथ में जल लेकर 'ॐ अस्य श्री' इत्यादि विनियोग को पढ़ता हुआ विनियोगके अन्त में हाथ के जल को पृथ्वी पर छोड़ दे और अमुक के स्थान में शत्रु के नाम का उच्चारण करे, यह विनियोग है, अब आगे विधान वर्णन करते हैं।

केवलं जपमात्रेण मासान्ते शत्रु मारणम् ।
कृष्णाष्टमीं समारभ्य यावत्कृष्णचतुर्दशि ॥
शत्रु नाम समायुक्तं मंत्रं तावज्जपन्नरः ।
रिपुपादस्थधूल्याश्च कुर्यात्पुत्तलिकांततः ॥५७॥
अजापुत्रबलिं दत्वा वस्त्रं रक्तेन संलिपेत् ।
ततोगृहीत्वा तद्वस्त्रं न्यसेत्पुत्तलिकोपरि ॥५८॥
यावच्छुष्यति तद्वस्त्रं तावच्छत्रुर्विनश्यति ।
मंत्रराजप्रभावेण नात्र कार्य्या विचारणा ॥५९॥

इस पहिले कहे हुए मन्त्र के केवल जप मात्र से ही एक मास में शत्रु मारण प्रयोग सिद्धि हो जाता है कृष्ण पक्ष की अष्टमी से लेकर कृष्णपक्ष की चतुर्दशी तक ॥५६॥ शत्रु के नाम सहित सावधानता पूर्वक इस मन्त्र को १०८ बार प्रतिदिन जपनेके बाद अन्तिमदिन यह करे कि—बैरी के पैर के तले की मिट्टी लेकर उसकी एक पुतली बनावे और उसे नीले कपड़े से लपेट कर मन्त्र द्वारा प्राण प्रतिष्ठा करे

और काली देवी की पूजा करे ॥५७॥ तथा बकरे का बलिदान करके उसके रुधिर से वस्त्र को भिगोले, और फिर उस वस्त्रसे पुतली को ऊपर से ढक देवे और मन्त्र का जप करता रहे ॥५८॥ जब तक वह वस्त्र सूखेगा तब तक शत्रु का विनाश हो जायगा, मन्त्रराज के प्रभाव से यह मारण प्रयोग अवश्य ही होता है इसमें सन्देह नहीं ॥५६॥

अथ बैरिमारण कवचम्

ॐअस्य श्रीकालिकाकवचस्य भैरवऋषिर्गायत्रीछंदः, श्रीकालिकादेवता,सद्योबैरिसंघनाशे विनियोगः ॥

अब शत्रु मारण के लिये काली कवच का वर्णन किया जाता है—पहिले हाथ में जल लेकर 'ॐ अस्य श्रीकालिका कवचस्य'- इत्यादि विनियोग पढ़कर जल को पृथ्वी पर छोड़ दे।

अथ ध्यानम् ।

ध्यात्वा कालीं महामायां त्रिनेत्रांबहुरूपिणीं ।
चतुर्भुजांलोलजिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम ॥६०॥
नीलोत्पलदलश्यामां बैरिसंघविदारिणीम् ।
नरमुण्डं तथा खंगं कमलं वरदं तथा ॥६१॥
बिभ्राणां रक्तवसनां घोरदंष्ट्रां भयापहम् ।
अट्टाट्टहासनिरतां सर्वदा च दिगम्बराम् ॥६२॥
शवास्थितांदेवीं मुण्डमाला विभूषिताम् ।
इति ध्यात्वा महादेवीं ततस्तु कवचंपठेत् ॥६३॥

फिर काली देवी का ध्यान इस प्रकार करे कि—तीन जिसके नेत्र हैं, बहुत विकराल रूप धारण किये हुए हैं, चार भुजा, लपलपाती हुई जिसकी जिह्वा है, पूर्ण चन्द्रमा के समान मुखारबिंद है

॥६०॥ नील कमल के तुल्य जिसका नीलवर्ण है, शत्रु समूह को विदारण करने वाली, चार भुजाओं में क्रम से नरमुण्ड, खड्ग, कमल, वर धारण किये हुए हैं ॥६१॥ रक्त वस्त्रों को पहिने हुए हैं, विकट दाढ़ों के कारण भयानक जिसका स्वरूप है, अट्टहास अर्थात् बड़े जोर से हंसने वाली है, सदा दिशारूपी वस्त्रों को धारण किये हैं ॥६२॥ मुर्दा पर बैठी हुई हैं, मुण्डों की माला से सुशोभित हो रही हैं ऐसी महाकाली देवी का ध्यान करके आगे लिखे हुए कवच को पढ़े ॥६३॥

ॐ कालिका घोररूपाढ्यासर्वकामप्रदाशुभा। सर्वदेवस्तुता देवी शत्रुनाशंकरोतु मे ॥६४॥ ह्रींह्रीं स्वरूपिणी चैव ह्रीं ह्रीं ह्रीं संगिनीतथा ह्रीं ह्रीं क्षौं क्षौं स्वरूपा सा सर्वदा शत्रुनाशिनी। श्रींह्रींऐंरूपिणी देवी भवबन्धविमोचनी। यथा शुम्भो हतो दैत्यो निशुंभश्च महासुरः ॥६६॥ वैरिनाशाय वन्दे तां कालिकां शंकरप्रियाम्। ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नरसिंहिका॥६७॥ कौमारीश्रीश्च चामुण्डा खादयन्तु ममविद्विषः। सुरेश्वरी घोररूपाचण्डमुंडविनाशिनी ॥६८॥ मुण्डमालावृतांगी च सर्वतः पातु मांसदा ॥ह्रीं ह्रीं कालिके। घोरदंष्ट्रेरुधिरप्रिये रुधिर पूर्णवक्त्रे च रुधिरपरिपूर्णान् मम शत्रून् खादय खादयहिंसय हिंसयमारयमारयभिन्धिभिन्धि छिंदिछिंदिउच्चाटय उच्चाटय द्रावयद्रावय शोषय२ यातुधानीं चामुण्डेह्रांह्रीं बांबीं कालिकायै सर्वशत्रून्

समर्पयामी स्वाहा ॐ जहि किट २ किर २ कट्टु२ मर्दय२ मोहय२ हर२ ममरिपून् ध्वंसय२ भक्षय२ त्रोटय२ यातुधानिके चामुंडे सर्वजनान् राजपुरुषान् राजश्रियं देहि देहि नूतनं धान्यं भक्षय २ क्षां क्षां क्षुं क्षैं क्षां क्षः स्वाहा ।। इति कवचम् ।।

यह कालो कवच है इसका पाठ करे इसके आगे कवच का माहात्म्य है।

इत्येतत्कवचं दिव्यं कथितं तव रावण ।
ये पठन्तिसदा भक्त्या तेषां नश्यन्तिशत्रव ।।६९।।
वैरिणःप्रलयं यांति व्याधिताश्चभवन्तिहि ।
धनहीनाः पुत्रहीनाः शत्रवस्तस्य सर्वदा ।।७०।।
सहस्रपठनात्सिद्धिः कवचस्य भवेत्तथा ।
ततःकार्याणिसिद्धयन्तिनान्यथा ममभाषितम् ।७१।

यह सुन्दर कालो कवच हे रावण! मैंने तुम्हारे आगे वर्णन कर दिया है जो कोई इसको भक्ति पूर्वक सदा पढ़ते है उनके बैरी ।६९। रोग से पीड़ित होकर नाश को प्राप्त हो जाते हैं तथा उनके धनऔर पुत्रों का विनाश होजाता है, ।।७१।। इस कवच के हजार पाठ करने से सिद्धि प्राप्त होती है. हे रावण ! यह हमारा कहा हुआ वचन अन्यथा नहीं है ।।७१।।

श्मशानांगारमोदाय चूर्ण कृत्वा विधानतः ।
पादोदकेन पिष्ट्वा च लिखेल्लोहशलाकया ।।७२।।
भूमौ शत्रून् हीनरूपानउत्तराशिरसस्तथा ।
हस्तं दत्वा तद्धृदये कवचं तु स्वयं पठेत् ।।७३।।

प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा वैतथा मंत्रेण मंत्रवित् ।
हन्यादस्त्र प्रहारेण शत्रोश्च कण्ठमक्षयम् ॥७४॥
ज्वलदंगारलेपेन भवति ज्वरितो भृशम् ।
प्रोक्षणैर्वामपादेन दरिद्रो भवति ध्रुवम् ॥७५॥

श्मशान में से चिता का अंगार (कोयला) लाकर, उसको चरणों के जल से पीसकर उसको स्याही से लोहे की कील द्वारा ।७२। भूमि पर सोती हुई बैरी की मूर्ति काढ़े जिसका कि सिरहना उत्तरकी तरफ हो और फिरउस मूर्ति को उसी लोहेकी कीलसे काटकर अनंतर उसके हृदय पर अपना हाथ रखकर उस कवच को पढ़े ॥७३॥ पहिले मंत्रका ज्ञाता पुरुष मंत्रसे उसकी प्राणप्रतिष्ठा करले, अनंतर शस्त्रप्रहार से बैरी के शिरको काट देवै ॥७४॥ और फिर उसके ऊपर अंगार के पटकने से शत्रु को ज्वर आने लगजाता है तथा उस मूर्ति के बायें चरणको जल के छिड़क ने से वह दरिद्री हो जाता है ॥७५॥

वैरिनाशकरं प्राक्तं कवचं वश्यकारकं ।
परमैश्वर्यप्रदं चैव पुत्रपौत्रादिवृद्धिदम् ॥७६॥
प्रभातसमये चैव पूजाकाले प्रयत्नतः ।
सायंकाले तथा पाठात् सर्वसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥७७॥
शत्रुरुच्चाटनंयातिदेशाद्वै विच्युतो भवेत् ।
पश्चात्किंकरतामेति सत्यमेव न संशयः ॥७८॥

इति श्रीलंकापतिरावणेश्वरसम्बादे उड्डीश-तंत्रे मारण प्रयोगोनाम प्रथमः पटलः ॥

यह वैरीनाशक कवच सबको वश में करने वाला तथा परमैश्वर्य देने वाला और पुत्रपौत्र आदि की वृद्धि करने वाला है ॥७६॥

प्रातः पूजा के समय तथा सायंकाल में प्रयत्न पूर्वक पढ़ने से सर्व प्रकार की सिद्धि होती है ॥७७॥ इस कवच के पाठ करने से बैरी का उच्चाटन होता है, देश से भाग जाता हैओर पीछे आकर वही सेवक बनजाताहै, यह निस्सन्देह है ॥७८॥ यह लंकापति रावण और सदा शिवजी के सम्वाद रूपउड्डीशतंत्रमें मारण प्रयोग नामका पहलापटलसमाप्तहुआ

अथ द्वितीया पटलः ॥ २ ॥

तत्रादौ मालानिर्णयः ॥

प्रवाल वज्र मणिभिर्वश्यपौष्टिकयोर्जपेत् ।
मत्तेभदन्त मणिभिर्जतेदाकृष्टि कर्मणि ॥१॥
मनुष्यकेशसूत्रोना स्तुरंगदशनोद्भवैः ।
अक्षमालां परिष्कृत्य बिद्वेषोच्चाटने जपेत् ॥२॥
मृतस्य शुद्धशून्यस्य दशनैर्गर्दभस्य च ।
कृत्वाक्षमालां जप्तव्यं शत्रोर्मारणमिच्छता ॥३॥
क्रियते शंख मणिभिर्धर्मकामार्थसिद्धये ।
पद्माक्षैः प्रजपेन्मन्त्रं सर्वकामार्थसिद्धये ॥४॥
रुद्राक्षमालया जप्तो मंत्रः सर्वफलप्रदः ।
स्फटिकामौक्तिकीवापिरौद्राक्षीवा प्रवालजा।
सरस्वतीप्राप्तये शस्तापुत्रजीवै स्तथाप्तये ॥५॥

अब दूसरा पटल प्रारम्भ होता है, उसमेंपहले मालाका निर्णय किया जाताहै, प्रवाल (मूंगा) वज्र (हीरा) मणि (रत्न) आदि की माल वशीकरण और पुष्टि कर्म में सिद्धिप्रद होती है। मदमत्त हाथी के दाँत के मनिकाओं की माला आकर्षण कर्म में उत्तम

होती है ॥१॥ तथा मनुष्य के शिर के बालों से घोड़े के दाँतों से बनाई हुई माला विद्वेषण और उच्चाटन कर्म में सिद्धिदायक होती है ॥२॥ मारण कर्म में विनायुद्ध के किसी दूसरी तरह से मरे हुए पुरुषके दाँतों की बनाई हुई माला या गधा के दांतोंकी माला से जप करना चाहिये ॥३॥ शंख या मणि की माला से धर्म, काम और अर्थ सिद्धि के लिए जप करना चाहिये और पद्माख (कमलगट्टों) की माला से सर्व कामना और अर्थ सिद्धि के लिये मन्त्र जपे ॥४॥ रुद्राक्ष की माला से किया हुआ मन्त्र जप सम्पूर्ण फल को देने वाला होता है। स्फटिक और मोतियोंकी तथा रुद्राक्ष या मूंगोंकी माला, एवं पुत्रजीवा (जीयापोता) की माला से विद्या की प्राप्ति तथा सरस्वती की सिद्धि के लिये जप करना चाहिये ॥५॥

पद्मसूत्रकृतारज्जुः शस्ताशान्तिकपौष्टिके ।
आकृष्टोच्चाटयोर्वाजिपुच्छवाल समुद्भवा ॥६॥
नरस्नायुविशेषैस्तु मारणे रज्जुरुत्तमा ।
अन्यासांचाक्षमालानांरज्जुःकार्पासिकीमता ॥७॥
सप्तविंशतिसंख्याकैः कृतासिद्धिं प्रयच्छति ।
अक्षैस्तु पंचदशभिरभिचार फलप्रदा ॥८॥
अक्षमाला विनिर्दिष्टामंत्रादौ तत्वदर्शिभिः ।
अष्टोत्तरशतेनैव सर्वकर्मभु पूजिता ॥९॥

पद्मसूत्र के डोरों में पुही हुई माला शान्तिक और पौष्टिक कर्म में शुभ कही गई है। तथा आकर्षण और उच्चाटन कर्म में घोड़ा के पूँछ के बालों के डोरा में गुँथी हुई माला शुभ होती है ॥६॥ और मनुष्य की नसोंसे गुँथी हुई माला मारण कर्म में ग्रहण करनी चाहिये, अन्य कर्मों में कपास के सूत से गुँथी हुई माला से मन्त्र जपना चाहिये ॥७॥ सत्ताईस दानों की माला सर्वसिद्धिप्रद होती है, अभिचार कर्म

में पन्द्रह दानों की मालापूर्ण फलदायक होती है॥८॥ तन्त्रवेत्ताविद्वानों ने समस्त तांत्रिक कर्मोंमेंएकसौ आठ मनियाओं की माला श्रेष्टमानी है ।

अथ मंत्रजपसमये दिङ् नियमः

जपेत्पूर्वमुखं वश्ये दक्षिणे चाभिचारके ।
पश्चिमं धनदं विद्यादुत्तरं शान्तिकंभवेत् ॥१०॥
आयुष्यरक्षांशान्ति च पुष्टिवापिकरिष्यति ।

मन्त्र जपने के समय किस कार्य में किस दिशा की तरफ मुख करके जप करना चाहिये उसका नियम यह है कि—वशीकरण प्रयोग में पूर्व की तरफ मुख करके जप करे, मारण आदि अभिचार कर्म में दक्षिण मुख करके मन्त्र जपे और धन प्राप्ति के लिए पश्चिम मुख होकर जपे, शान्तिकर्म में उत्तर मुख बैठ कर जपे ॥१॥ आयुरक्षा, शान्तिकर्म तथा पुष्टिकर्म में उत्तर दिशा को मुख करके जप आदि कार्य करने चाहिये ।

अथ जपलक्षणम्

यःश्रूयतेऽन्यैः स तु वाचिकःस्यदुपांशुसंज्ञो निज-
देहवेद्यः॥ निष्कम्पदन्तौष्ठमथाक्षराणां यच्चिन्तितन्न
स्यादिह मानसाख्यः।११। पराभिचारे किलवाचिकः
स्यादुपांशुरुक्तोऽप्यथ शांतिपुष्ट्योः ॥ मोक्षेषुजापः
किल मानसाख्यस्त्रिधा जपःपापनुदे तथोक्तः ।१२।

वाचिक, उपांशु और मानसिक भेद से जप तीन प्रकार का कहा है जपते समय जो मन्त्र दूसरों द्वारा सुन लिया जाय उसे वाचिक जप कहते हैं, जिसे दूसरा न सुन सके अपने आपको ही सुनाई पड़े उसको उपांशु जप कहते हैं और जिसमें होठ और जिह्वा चलायमान न होवें

केवल मन से ही ध्यान पूर्वक जपा जाय उसे मानसिक जप कहते हैं, मानसिक जप में अक्षरों का ध्यान रखना पड़ता है ।।११।। अभिचार (मारण) आदि प्रयोगों में वाचिक जप सिद्धिदायक होता है और शान्ति तथा पौष्टिक कर्म में उपांशु जप सिद्धिप्रद होता है तथा मोक्ष साधन कर्म में मानस जप श्रेष्ट कहा है और पापों के नाश के लिए तो यह तीनों प्रकार का ही जप उत्तम माना गया है ।।१२।।

अथाश्वमारणम्

कृष्णजीरकचूर्णेन अंजिताश्वो न पश्यति ।
तक्रेण क्षाययेच्चक्षुः सुस्थोभवति घोटकः ।।१३।।

अब अश्व मारण प्रयोग की विधि कहते हैं कि—काले जीरे को पीस करके अंजन बनावे और उसे घोड़े की आँखों में आँज दे तो वह घोड़ा अन्धा हो जाता है और यदि फिर छाछ से उस घोड़ा की आँखें धो दी जायँ तो फिर उसे दीखने लग जाता है ।।१३।।

घ्राणे छुछुन्दरीचूर्णेदत्ते पतति घोटकः ।
स्वस्थश्चन्दनपानेन नासया तु न संशयः ।।१४।।

मरी हुई छछुन्दरी को सुखाले और उसका चूर्ण यदि घोड़ा को सुँघा दिया जाय तो घोड़ा गिर पड़ता है और फिर चन्दन को जल में पीस कर नासिका द्वारा पान करा देने से वही घोड़ा अच्छा हो जाता है इसमें सन्देह नहीं है ।।१४।।

अश्वास्थिकीलमश्विन्यां कुर्यात्सप्तांगुलं पुनः।निख-नेदश्वशालायां मारयत्येव घोटकान् ।।१५।।मंत्रस्तु ॐ पचपच स्वाहा ।। अयुत जपात्सिद्धिः ।।

अश्विनी नक्षत्र में घोड़ा के हाड़ की सात अंगुल कील लेकर घुड़शाला में 'ॐ पचपच स्वाहा' इस मन्त्र को पढ़कर गाढ़ दे तो उस

घुड़शाल के घोड़े मर जाते हैं, किन्तु पहले इसमन्त्र को दसहजार बार जप कर सिद्ध कर लेना चाहिये तब इस प्रयोग को करे ॥१५॥

अथ धीवरस्य मत्स्यनाशनम्

संग्राह्यं पूर्वफाल्गुन्यां बदरीकाष्ठकीलकम् ।
दाशगेहेष्टांगुलं च निखनेन्मत्स्यनाशकम् ॥१६॥
ॐ जले पच पच स्वाहा ॥ इत्यनेन मंत्रेणा-
युतजपात्सिद्धिः ॥

अब धीमर की मछलियों के नाश होने का प्रयोग कहते हैं कि-पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र जिसदिन हो उसदिन बैरि के काठकी आठ अंगुल की एक कील ले और उसे धीमर के घरमें गाढ़ तो उसकी मछलियों का नाश हो जाता है ॥१६॥ 'ॐजले पच्च पच स्वाहा' इस मन्त्र को जपता हुआ कील को गाढ़े, परन्तु पहिले यह मन्त्र १०००० बार जप कर सिद्ध कर लेना चाहिये ॥

अथ रजकस्य वस्त्रनाशनम्

गृहीत्वा पूर्वफाल्गुन्यांजातीकाष्ठस्य कीलकं ।
अष्टांगुलप्रमाणं तु निखनेद्राजकेगृहे ॥१७॥
शताभिमंत्रितंकृत्वातस्य वस्त्राणि नाशयेत ।
ॐ कुंभं स्वाहा ॥

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के दिनचमेली की लकड़ी की कील आठ अंगुल की लाकर उसको ॥१७॥ मन्त्र से सौ बार अभिमन्त्रित करके धोबी के घरमें गाढ़ दे तो उसके सब वस्त्रों का नाश हो इसका—ॐ' कुम्भंस्वाहा' यह मन्त्र है ।

अथ तैलनाशनम्

मधुकाष्ठस्य कीलं तु चित्रायां चतुरंगुलम् ।
निखनेत्तैलशालायां तैलं तत्र विनश्यति ।।१८।।

ॐ दह दह स्वाहा ।। इत्यनेन मंत्रेण सहस्र संख्याकजपः ।।

चित्रानक्षत्र के दिन मोरेट की लकड़ी की कील चार अंगुल की ले और उसे तेली की तेलशाला में गाढ़ दे तो वहाँ तेल का नाश हो जायगा, किन्तु 'ॐ दह दह स्वाहा' इस मन्त्र को पहिले हजार बार जप करके सिद्ध करले ।

अथ शाकनाशनम्

गन्धकं चूर्णितं तत्र निक्षिपेज्जलमिश्रितम् ।
नश्यंति सर्वशाकानि शोषाण्यबलानि च ।।१९।।

अब शाक के नाश का प्रयोग वर्णन करते हैं, कि गन्धक के चूर्ण को जल में मिलाकर खेत में जहाँ तहाँ छिड़क दे, तो सब शाक सूख जाते हैं और निर्मल पड़ जाते हैं ।।१९।।

अथ दुग्धनाशनम्

निक्षिपेदनुराधायां जम्बूकाष्ठस्य कीलकं ।
अष्टांगुलं गोपगेहे गोदुग्धं पविनश्यति ।।२०।।

जामुन के वृक्ष की एक कोल आठ अंगुल लेकर अनुराधा नक्षत्र के दिन अहीर के घर में गाढ़ दी जाय तो उसकी गौवों का दूध सूख जायगा ।।२०।।

अथ मद्यनाशनम्

षोडशांगुलकं कीलं कृत्तिकायांसितार्कजम् ।
शौण्डिकस्य गृहेक्षिप्तं मदिरां नाशयत्यलम् ॥२१॥

अब मद्यनाशन का उपाय बतातेहैं, कि -- कृत्तिका नक्षत्रके दिन सफेद आक की सोलह अंगुल की एक कील लाकर शौंडिक (कलार) के घर में डाल दे तो मदिरा का नाश हो जाता है ॥२१॥

अथ ताम्बूलनाशनम्

नवांगुलं पूगकाष्ठकीलकं निक्षिपेद्गृहे ।
ताम्बूलिकस्य क्षेत्रे वा वृक्षे शतभिषाऽह्वये ॥२२॥
तदा तस्य च ताम्बूलंनाशयत्याशुनिश्चितम् ।

नौ अंगुल की सुपाड़ी के काठ की एक कील शतभिषा नक्षत्रके दिन लाकर तम्बोली के घर या वाड़ी में डाल देने से ॥२२॥ उसके पान शीघ्र नष्ट हो जाते हैं अर्थात् सब सड़ जाते हैं।

अथ सस्यनाशनम्

सस्यस्य नाशन चाथ कथयामि समासतः ।
येनैव कृतमात्रेण सस्यनाशो भविष्यति ॥२३॥
इन्द्रवज्रं पतेद्यत्र गृहीत्वा मृत्तिकां ततः ।
तन्मृत्तिकां समादाय वज्रं कृत्वा विचक्षणः॥२४॥
क्षेत्रे यस्मिन् रोपयेत्तत्सस्यं सर्वं विनश्यति ।
इमं मन्त्रं समुच्चार्य मंत्रेणानेन मंत्रयेत् ॥२५॥

मंत्रस्तु ॥ ॐ नमो वज्रपाताय सुरपतिराज्ञा-

पयति हुँ फट् स्वाहा ।।

इति श्रीरावणेश्वरसम्वादे उड्डीशतंत्रे अश्वादि नाशनप्रकारवर्णनं नाम द्वितीय पटलः ।।२।।

अब सस्यनाशक प्रकार का विस्तार सहित वर्णन किया जाता है ।।१३।। जिस स्थान पर इन्द्रवज्र बिजली पड़ी हो वहाँ की मिट्टी लेकर बुद्धिमान् जन उस मिट्टी का एक वज्र बनाले ।।२४।। और फिर वह वज्र जिसके खेत में खड़ा कर दिया जायगा, उस खेतके सब सस्य का नाश हो जायगा वह वज्र 'ॐ नमो वज्रपात' आदि मूल में कहे हुये मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके तथा उच्चारण करके ही गाढ़ना चाहिये । वह मन्त्र यह है 'ॐ नमोवज्रापाताय०' इत्यादि० यह दूसरा पटल समाप्त हुआ ।

अथ तृतीय पटलः

मोहनं तन्त्रम् ।। ईश्वरउवाच ।।

अथाग्रे कथयिष्यामि प्रयोगं मोहनाभिधम् ।
सद्यः सिद्धिकरं नृणां शृणु रावण यत्नतः ।।१।।

शिवजी बोले कि—अब आगे मैं मोहन नाम के प्रयोग का वर्णन करूंगा, जिसके करनेसे साधकों को शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है मनुष्यों को शीघ्र सिद्धि करने शाला है अतः हे रावण ! तुम यत्नसे उसे सुनो।

सिंदूरं कुंकुमं चैव गोरोचनसमन्वितं ।
धात्रीरसेन सम्पिष्य तिलकं लोकमोहनन् ।।२।।
सहदेव्या रसेनैव तुलसीवीजचूर्णकम् ।
रवौ यस्तिलकं कुर्यान्मोहयेत्सकलं जगत् ।।३।।

सिंदूर और कुंकुम को गोरोचन में मिलाकर आंवले के रस में

पीसकर उस तिलक को लगावे तो - ।क मोहित हो जाय ।।२।। तथा सहदेवी के रस में तुलसी के बोजों को पीसकर फिर उस तिलक को यदि रविवार के दिन करे तो सब संसार मोहित हो जाय ।।३।।

मनः शिलांच कर्पूरं पेषयेत्कदलीरसे ।
तिलकं मोहनं नृणां नान्यथामम भाषितम् ।।४।।

मैनसिल और कपूर को केला के रसमें पीसकर तिलक करेतो संसार मोहित हो जाय, शिवजी कहते हैं - कि यह मेरा कथन असत्य नहीं है ।।४।।

हरितालं चाश्वगन्धां पेषयेत्कदलीरसे ।
गोरोचनेन संयुक्तं तिलकं लोकमोहनम् ।।५।।

हरताल और असगन्ध को केला के रस में पीसे और उसमें गोरोचन मिलाकर तिलक करे तो लोक मोहित हो जाय ।।५।।

शृंगीचन्दनसंयुक्तं वचाकुष्ठसमन्वितम् ।
धूपं देहे तथा वस्त्रे मुखे दद्याद्विशेषतः ।।६।।

काकड़ासिंगी, चन्दन, वच और कूट इन सबको मिलाकर धूप बना ले और फिर उस धूप को अपने शरीर पर तथा वस्त्र पर और मुख पर विशेषतया दे तो ।।६।।

पशुपक्षिप्रजानां च राज्ञां मोहन कारकम् ।
ताम्बूलमूलतिलकं लोकमोहनकारकम् ।।७।।

फिर वह धूप पशु, पक्षी, प्रजा और राजा सबको मोहित करने वाली होती है तथा ताम्बूल (पान) की जड़ पीसकर तिलक लगाने से सब लोग मोहित हो जाते हैं ।।७।।

सिंदूरं च श्वेतबचा ताम्बूलरसपेषिता ।
अनेनैव तु मंत्रेण तिलकं लोकमोहनम् ।।८।।

सिन्दूर और सफेद वच को पान के रसमें पीसकर फिर उसको 'ॐ उड्डामेश्वराय' आदि आगे लिखे मन्त्र से मस्तक पर लगावे तो लोक मोहित हो जाय। ८॥

अपामार्गो भृंगराजो लाजा च सहदेविका।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा त्रैलोक्यं मोहयेन्नरः ॥९॥

भांगरा, चिचिरा, लाजवन्ती और सहदेवी इन सबके बनाये हुए तिलक के लगाने से सब संसार मोहित हो जाता है। ९॥

श्वेतदूर्वां गृहीत्वा तु हरितालं च पेषयेत्।
कृतं तु तिलकं भाले दर्शनान्मोहकारकम् ॥१०॥

सफेद दूब में हरताल मिलाकर पीसे और फिर उसका तिलक मस्तक पर लगावे तो देखने से मोह करे, सब लोग मोहित हो जाँय॥

विल्वपत्रं गृहीत्वातु छायाशुष्कन्तु कारयेत्।
कपिलापयसा युक्तं वटीं कृत्वातु गोलकम् ॥
एभिस्तु तिलकं कृत्वा मोहयेत्सर्वतो जगत् ॥११॥
मंत्रस्तु—ॐउड्डामरेश्वराय सर्वजगन्मोहनाय अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं हुँ फट् स्वाहा॥ लक्षजपेन सिद्धि। सप्तवाराभिमंत्रितं कुर्यात्॥ इति श्री रावणेश्वरसंवादे उड्डीशतंत्रे मोहनप्रकारोनामतृतीयः पटलः ॥३॥

बेलपत्र लेकर छाया में सुखा ले और फिर उनको कपिला गौ के दूध में पीसकर गोली बनावे, उस गोली का किया हुआ तिलक लगावे तो सब जगत् को मोहित कर देता है ॥११॥ उसकी विधि यह है कि पहिले, 'ॐ उड्डामरेश्वराय' इत्यादि मन्त्रको एक लक्ष बारजप

कर सिद्ध करले और फिर जब तिलक लगायेतभी उस तिलकको मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके ही लगाये। उड्डीशतन्त्र में यहमोहन नामक तीसरा पटल समाप्त हुआ ॥३॥

अथ चतुर्थः पटलः

अथ स्तम्भनम्। तत्रादौ जलस्तंभनम् ॥

ईश्वर उवाच।

अथाग्रेसम्प्रवक्ष्यामि प्रयोगं स्तम्भनाभिधम्।
यस्य साधनमात्रेण सिद्धि करतले भवेत् ॥१॥

अब स्तम्भन नाम का चौथा पटल प्रारम्भ होता है उसमें पहिले स्तम्भन जलस्तम्भन कहते हैं। श्री शिवजी बोले कि—अब हम स्तम्भन नामक प्रयोग का वर्णन करते हैं जिसके साधन मात्र से ही सिद्धि हस्तगत हो जाती है ॥१॥

तत्रादौ कथयिष्यामि जलस्तम्भनमुत्तमम्।
कुलीरनेत्रदंष्ट्राश्च रुधिर मांसमेव च ॥२॥

उसमें सबसे प्रथम जलस्तम्भन प्रकार का अच्छी रीति सेवर्णन करता हूँ कि—कुलीर (केंकड़ा) के नेत्र, दाढ़, रुधिर तथा माँस ॥ ॥

हृदय कच्छपस्यैव शिशुमारवसा तथा।
विभीतकस्य तैलेन सर्वाण्येकत्र सिद्धयेत् ॥३॥

और कछुआ का हृदय तथा शिशुमार (जल जन्तु विशेष) की चर्बी और भिलावा इन सबको मिलाकर तेल में पकावे ॥३॥ फिर इसके लेप करनेसे सानन्द मनुष्य जल पर डट सकताहै डूबता नहीं है।

एभिः प्रलेपनं कुर्याज्जले तिष्ठेद्यथा सुखम्।
उरगस्य बसा ग्राह्या नक्रस्य नकुलस्य च ॥४॥

डुंडुभस्य शिरो ग्राह्यंसर्वाण्येकत्र कारयेत् ।
विभीतकस्य तैलेन सिद्धं कुर्याद्यथाविधि ॥५॥
तैलं पक्त्वाऽयसेपात्रेकृष्णाष्टम्यांसमाहितः ।
शंकरस्यार्चनं कृत्वामूर्ध्नाकृत्वा नमस्क्रियाम् ॥६॥
अष्टाऽधिक सहस्रं तुचाज्यहोम ततश्चरेत् ।
लेपं कृत्वाऽथ मंत्रेण ततः सिद्धि नुजायते ॥७॥
मंत्रस्तु । ॐ नमोभगवते जलं स्तंभय हूँ स्वाहा ॥

साँप, मगर और न्यौला की चर्बी ॥४॥ तथा विष रहित साँप के बच्चे का शिर इन सबको एकत्रित करके मिलावे के तेल में विधिवत् पकावे ॥५॥ जब वह तेल पक जाय तब उसे किसी लोहे के बर्तन में कृष्णपक्ष की अष्टमी को सुरादीन करके रखदे और फिर शंकरजी का पूजन कर शिर झुकाकर प्रणाम करने के अनन्तर ॥६॥ एक हजार आठ बार मन्त्र से घी का हवन करे और उसी मन्त्र से इसका लेप करे, तो सिद्धि होती है ॥७॥

ॐ नमो भगवते, इत्यादि मन्त्र मूल में ही ।

मंडूकस्य वसाग्राह्या कर्तूरेणैव संयुता ।
लेपमात्राच्छरी तुह्यग्निस्तंभः प्रजायते ॥८॥
कुमारीरसलेपेन किंचिद्वस्तु न दह्यते ।
अग्निष्तंभनयोगोऽयंनान्यथामम भाषितम् ॥९॥

अब अग्नि स्तम्भन का प्रकार कहते हैं कि मेंढक की चर्बी में कपूर मिलाकर शरीर पर लेप करनेसे अग्निका स्तम्भन होताहै शरीर दग्ध नहीं होता है ॥८॥ और यदि यही लेप घी ग्वार के रस में मिला कर किसी भी चीज पर कर दिया जाय तो लेप करने से कोईभी वस्तु नहीं जलती है शिवजी कहते हैं कि—यह हमारा कहा हुआ अग्निस्त

भन प्रयोग असत्य नहीं है ।।९।। 'ॐ नमो भगवते अग्निस्तम्भय फट् स्वाहा' ।। इस मन्त्र का १०८ बार जप करना चाहिये ।

आज्यं शर्करयापीत्वा चर्वयित्वा च नागरं ।
तप्तलोहं मुखेक्षिप्तं वक्त्रं न दहते क्वचित् ।।१०।।

घी और शक्कर मिलाकर पीने के बाद यदि सोंठ चबा ली जाय तो तपे हुये लोहे को मुखमें रख लेने पर भी मुख नहीं जलता है।

अथासनस्तंभनम्

श्वेतगुंजाफलं क्षिप्त्वा नृकपालेतुमृत्तिकाम् ।
वलिं दत्वातु दुग्धस्य तस्य वृक्षो भवेद्यदा ।।११।।
तस्यशाखालताग्राह्ययायस्याग्रेतांबिनिक्षिपेत् ।
तस्य स्थाने भवेत्स्तंभः सिद्धियोग उदाहृतः ।।१२।।
ॐ नमो दिगम्बराय अमुकस्यासनस्तंभनम् कुरु कुरु स्वाहा ।। अयुतजपात्सिद्धिः ।।

अब आसन स्तम्भन के प्रयोगको कहते हैं कि—मनुष्यके कपाल में मिट्टी भरकर उसमें सफेद घूँघची के बीज बोदे और उसकी जड़को तब तक दूध से सींचता रहे जब तक कि उसकावृक्ष उग न आवे, फिर उसकी डाली और कली लेकर उसे जिसके आगे फेंक दे, उसके स्थान में आसनस्तम्भन हो अर्थात् वह फिर एक स्थानसे चलकर दूसरेस्थान को जाने में समर्थ न हो सके ।।१२।। किन्तु पहिले 'ॐनमो दिगम्बराय०' इत्यादि मन्त्र दशहजार जपकर सिद्ध कर लेना चाहिये ।

अथ बुद्धिस्तम्भनम्

उलूकस्य कपेर्वापि ताम्बूले यस्य दापयेत् ।

विष्ठां प्रयत्नस्तस्य बुद्धिस्तम्भः प्रजायते ॥१३॥

उल्लू पक्षी या बन्दर की बीठ को पान में रखकर प्रयत्न से जिस मनुष्य को खिला दे उसकी बुद्धि स्तब्ध (भ्रष्ट) हो जाय ॥१३॥

अथ शस्त्रस्तम्भनम्

पुष्यार्केऽन्हि समादाय खरमञ्जरिमूलकम् ।
धृष्ट्वा लिंपेच्छरीरे स्वे शस्त्रस्तंभः प्रजायते॥१४॥

रविवार युक्त पुष्य नक्षत्र को खरमंजरि (ओंगा, चिचिरा) की जड़ लाकर उसे घिस के जिसके अग में लेप करदे तो शस्त्र स्तम्भन हो अर्थात् उसके अङ्ग में हथियार न छिद सके ॥१४॥

खर्जूरी मुखमध्यस्था कटिबद्धा च केतकी ।
भुजदंडस्थिते चार्के शर्वशस्त्र निवारणम् ॥१५॥

खजूर की जड़ मुख में और केतकी की जड़ कमर में तथा भुजदण्ड पर आक की जड़ बाँधने से शरीरमें कोई शस्त्र नहीं लगने पाता।

गृहीत्वा रविवारे तु बिल्वपत्रं च कोमलम् ।
लेपःशस्त्रस्तंभकश्च पिष्ट्वा विषसमं ततः ॥१६॥

ॐ नमो अघोररूपाय शस्त्रस्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ अयुतजपात्सिद्धिः ॥

रविवार के दिन विल्वपत्र की कोंपल (नरम पत्ता) लाकर उनको कमलनाथ के साथ पीसकर शरीर पर लेप करने से शरीर में शस्त्र नहीं छिदता॥१६॥ इसके पूर्व 'ॐ नमो अघोर०' इत्यादि मन्त्रको १०००० दश हजार बार जपकर सिद्धि करले फिर इस प्रयोग को करे

अथ मेघस्तंभम्

इष्टकाद्वयमादाय सम्पुटं कारयेन्नरः ।

चितांगारेण संलेख्य भूस्थं स्तंभनमेघकम् ॥१७॥

ॐ नमो नारायणाय मेघस्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ अयुतजपात्सिद्धिर्भवति ॥

मेघ स्तम्भन का प्रयोग यह कि – दो ईंटें लेकर उन पर चिता के कोयले से मेघ लिखकर और संपुट बनाकर भूमि में गाढ़ देवे तो मेघों का स्तम्भन हो ॥१७॥ 'ॐ नमो नारायणाय०' इत्यादि मन्त्र के दशहजार जपने से सिद्धि होती है और गाढ़ते समय भी यही मन्त्र पढ़ना चाहिये ॥

अथ निद्रास्तम्भनम्

मूलं वृहत्या मधुकं पिष्ट्वा नस्यं समाचरेत् ।

अथवा । मधुना बृहतीमूलैरंजयेल्लोचनद्वयम् ।

निद्रास्तंम्भो भवेत्तस्यनान्यथाममभाषितम् ॥१८॥

ॐ नमो नृसिंह निद्रास्तंभनं कुरु कुरु स्वाहा॥

अब निद्रास्तम्भन कहते हैं कि कटेरी की जड़ को शहद में पीसकर उसको नाक से हुलास की तरह सूंघे (अथवा) कटेरी की जड़ को शहद में पीस कर नेत्रों में आंजले तो निद्रा का स्तम्भन हो निद्रा न आवे, शिवजी कहते हैं कि—यह हमारा वचन सत्य है, अन्यथा नहीं जानना चाहिये ॥१८॥ 'ॐ नमो नृसिंहाय०' इत्यादि मन्त्र को पहिले सिद्ध कर लेना आवश्यक है ॥

अथ गोमहिष्यादिस्तंभनम्

उष्ट्रस्यास्थि चतुर्दिक्षु निखनेद्भूतले ध्रुवम् ।

गोमहिष्यादि कस्तम्भः सिद्धयोग उदाहृतः ॥१९॥

उष्ट्रलोम गृहीत्वा तु पशूपरि विनिक्षिपेत् ।

पशूनां भवतिस्तम्भः सिद्धियोग उदाहृतः ॥२०॥

अब गौ, भैंस आदि पशुओं के स्तम्भन प्रयोग को कहतेहैं—कि ऊँट के हाड़ को गाय, भैंस आदि के खिरक के चारों दिशाओं में भूमि में गाढ़ देने से भैंस आदि का स्तम्भन होता है ॥१९॥ उँट के रोम लेकर किसी पशु के शरीर पर फेंक देने से पशुओं का स्तंभन होजाता है यह प्रयोग सिद्ध किया हुआ है ॥२०॥

अथ मुखस्तम्भनम्

हरतालरसेनैद रविपत्रे समालिखेत् ।
यस्य नामोद्यानमध्ये ईशाने स्थापयेत्ततः ॥२१॥
मुखस्तम्भनं तस्य नान्यथा मम भाषितम् ।

अब मुख स्तम्भन कहते हैं कि—हरताल के रस से आक के पत्ते पर जिसका नाम लिख कर बाग बीच ईशानकोण में रख दे।२१। तो जिसका नाम लिखा है उसी पुरुष का स्तम्भन हो जायगा, शिवजी कहते हैं कि—यह हमारा कथन मिथ्या नहीं है ॥

अथ सैन्यस्तम्भनम्

रविवारे गृहीत्वा तु श्वेतगुञ्जाफलं शुभम् ।
निखनेच्च श्मशाने वै पाषाणं तत्र दापयेत् ॥२२॥

सेना का स्तम्भन यह है कि-रविवार के दिन बुद्धिमान् साधक सफेद घुँघुची के फल को लाकर श्मशान में गाढ़ दे और उसके ऊपर एक पत्थर रख दे ॥२२॥

योगिन्योऽष्टौ च संपूज्यारौद्री महेश्वरीतथा ।
बाराही नारसिंही च वैष्णवी चकुमारिका ॥२३॥
लक्ष्मीब्राह्मी च संपूज्या गणेशो बटुकस्तथा ।

क्षेत्रपालःसदा पूज्यःसैन्यस्तम्भो भविष्यति ।।२४।।
पृथक् पृथक् बलि दत्वादशानान्तुविभागतः ।
मद्यं मांसं तथा पुष्पं धूपं दीपावलिक्रिया ।।२५।।
'ॐ नमः कालरात्रि त्रिशूलधारिणी मम शत्रु सैन्य-स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा अयुतजपात्सिद्धिः' ।।

और आठ योगिनी, रौद्री, माहेश्वरी, वाराही, नारसिंही, वैष्णवी कुमारिका, लक्ष्मी, गणेशजी, बटुक और क्षेत्रपाल इनकी नाम मन्त्रों से पृथक् पृथक् पूजा करे ।।२३।।२४।। और पृथक् पृथक् सबको बलि-दान दे उसी प्रकार दश दिक्पालों का पूजन और बलिदान करे, बलि-दान में मद्य (मदिरा) मांस तथा फूल, धूप और दीप भी देना चाहिये ।।२५।। 'ॐ नमः कालरात्रि०' इत्यादि मन्त्र हैं इनको दशहजार बार जपने से सिद्धि प्राप्त होती है।

अथ सैन्यविमुखीकरणम्

भौमवारे गृहीत्वा तु काकोलूकस्य पक्षकौ ।
भूर्जपत्रे लिखेन्मन्त्रं शत्रुनामसमन्वितम् ।।२६।।
गोरोचनैर्गले बध्वा काकोलूकद्वयं तथा ।
सेनानीसम्मुखं गच्छेन्नान्यथा च मयोदितम् ।।२७।।
शब्दमात्रे सैन्यमध्ये पलायन्ते सुनिश्चितम् ।
राजाप्रजा गजाश्चापिममनासत्यभाषितम् ।।२८।।

ॐनमो भयंकरायखंगधारिणी मम ।। शत्रु सैन्य-पलायनं कुरु कुरु स्वाहा ।। अयुतजपात्सिद्धिर्भवति।

इति श्रीरावणेश्वरसम्वादे उड्डीशतंत्रे स्तम्भन-प्रयोगो नाम चतुर्थं पटलः ॥४॥

अब सेना के विमुखीकरण विधि को कहते हैं कि—मंगलवार के दिन कौआ और उल्लू के पंखों को लाकर गोरोचन से भोजपत्र पर इस मन्त्र के सहित शत्रु का नाम लिखे ॥२६॥ गोरोचन से लिखे हुए उन यंत्ररूप पंखों को कौआ और उल्लू के गले में बाँध छोड़ दे, जब दोनों पक्षी उड़ कर सेना के सम्मुख जावेंगे ॥२७॥ तो उनके शब्द मात्र से ही सेनाके राजा प्रजा हाथी आदि सब भागने लग जायँगे, यह मेरा भाषण असत्य नहीं है ॥२८॥ 'ॐ नमो भयंकराय' इत्यादि मन्त्र को दसहजार वार जपकर प्रथम सिद्ध करले, तब स्तम्भन प्रयोग करना चाहिये ॥ उड्डीशतन्त्र में यह स्तम्भन प्रयोग समाप्त हुआ ॥

अथ पंचमः पटलः ॥ ५ ॥

तत्र विद्वेषणम् ॥ ईश्वरउवाच ॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि योगंविद्वेषणाभिधम् ।
महाकौतुकरूपं च शृणु रावण यत्नतः ॥१॥

श्रीशिवजी बोले कि—अब मैं विद्वेषणनामक प्रयोग का वर्णन करता हूँ, जिस महाकौतुकरूपी योग से आपस में बैरभाव उत्पन्न हो जाता है, अत हे रावण! तुम उसे एकाग्रचित्त से सुनो ॥१॥

गजदन्तं गृहीत्वा च सिंहदन्तं तथैव च ।
पेषयेन्नवनीतेन तिलकं द्वेषकारकम् ॥२॥

हाथी का दाँत और सिंह का दाँत लेकर माखन के साथ पीस कर वह जिन किन्हीं दो मनुष्योंके मस्तक पर तिलक रूपसे लगादिया जायगा, तो वह तिलक उन दोनों में वैरभाव करा देगा ॥२॥

एकहस्ते काकपक्षमुलूकस्य करे परे ।

मंत्रयित्वा मेलयित्वा कृष्णसूत्रेण वेष्टयेत ॥३॥
अंजल्या च जले चैव तर्पयेत् हस्तपक्षके।
एवंसप्तदिनं कुर्यादष्टोत्तरशतं जपेत् ॥४॥

एक हाथ में कौआ का पंख. दूसरे हाथ में उल्लू पक्षी का पंख, लेकर मन्त्र पढ़कर दोनों के अग्रभाग को मिला कर काले सूत्रमें लपेट दे ॥३॥ फिर उस काले वस्त्र में लिपटे हुए पंखों को दोनों हाथों से पकड़ कर जल में खड़ा होकर सात दिन तक अंजलि द्वारा तर्पण करे और तर्पण के बाद एकसौ आठ मन्त्र जपे तो विद्वेषण हो ॥४॥

गृहीत्वा गजकेशं च सिंहकेशं तथैव च।
गृहीत्वा पादपांसुंच पुत्तलीं निखनेद्भुवि ॥५॥
अग्निस्तस्योपरिस्थाप्योमालतीकुसुमं हुनेत्।
विद्वेषं कुरुते नूनं नान्यथा च मयोदितम् ॥६॥

जिन दोनों का परस्पर द्वेष करना है उन दोनों के पैरों की मिट्टी ले और उसमें हाथी तथा सिंहके बालों को मिलाकर एक पुतली बनाकर धर्ती में गाढ़ दे ॥५॥ फिर उस पर अग्नि स्थापन करके चमेली के फूलों से हवन करे, तो निश्चय विद्वेष हो, यह मेरा भाषण अन्यथा नहीं है ॥६॥

ब्रह्मदंडी समूलां च काकजंघासमन्विताम्।
जातीपुष्परसैर्भाव्या सप्तरात्रं पुनः पुनः ॥७॥
ततो मार्जारमूत्रेण सप्ताहं भावयेत्पुनः।
एष धूपः प्रदातव्यो शत्रुगोत्रस्य मध्यतः ॥८॥
यथा गन्धं समाघ्रातितथा सर्वैस्समं कलिः।
महद्विद्वेषणं याति सुहृद्भिर्बान्धवैस्सह ॥९॥

ब्रह्मदण्डी को लेकर उसमें काकजंघा (कौआगोड़ी) मिलावेऔर उसमें चमेली के रस की भावना दे, इस प्रकार सात रात्रि तक बार२ चमेली के रस की भावना देता रहे ॥७॥ अनन्तर बिल्ली के मूत्र की सात दिन तक भावना दे फिर जिस शत्रु के कुटुम्ब में द्वेष कराना हो उसके गोत्रको एक कागज पर लिखकर इसकी धूनीदे तो जैसे२ उसकी गन्ध आती रहेगी वैसे ही उन सबके संग कलह होने लगेगी इस प्रकार सभी सुहृद् और बांधवों के साथ महा बैर भाव हो जायगा ॥८॥

गजकेसरिणोर्दन्तान्नवनीतेन पेषयेत् ।
यन्नाम्ना हूयते चाग्नौ तयोर्विद्वेषणं भवेत् ॥१०॥
गृहीत्वा माहिषं केशमश्वकेशेन संयुतम् ।
सभायां दीयते धूपोविद्वेषो जायते क्षणात् ॥११॥

हाथी के दाँत और सिंह के दाँतों के चूर्ण को मक्खन के साथ पीसकर उनका जिन दोनों के नामसे अग्नि में हवन करे, तो उन दोनों के बीच वैरभाव होजाय ॥१०॥ और घोड़े के बालों को भैंसा के बालों में मिलाकर सभा में धूप दे तो क्षण में विद्वेष भाव उत्पन्न हो जाय।

मूषामार्जारयोश्चैव विष्ठामादाय यत्नतः ।
विद्वेष्यपादतलयो मृंदमादाय मेलयेत् ॥१२॥
जपेन्मंत्रशतं कुर्यान्नरपुत्तलिकां शुभाम् ।
नीलवस्त्रेण संवेष्टच तदगृहे निखनेद्यदि ॥१३॥
विद्वेषो जायते शीघ्रं बन्धूनां तातपुत्रयोः ॥१४॥

मूसे और बिल्ली की विष्टा को यत्नपूर्वक ले, और फिर जिसका आपसमें वैर कराना है उन दोनों के चरण तले की मिट्टी लेकर उसमें मिलावे ॥१२॥ और उसकी मनुष्याकार एक पुतली बनाकर और सौ बार मन्त्र जपकर नीलवस्त्रसे उसपुतली को लपेटकर बैरीके घरमें गाढ़

दे ।१३। तो भाई भाइयों में तथा पिता पुत्र में शीघ्र वैरभाव हो जाय ।

एक हस्ते काकपक्षमुलूकस्य करे परे ।
मंत्रयित्वा मेलयित्वा कृष्ण मूत्रेण वेष्टयेत् ।।१५।।
यद्गृहे निलयेद्भूमौ विद्वेषस्तस्य जायते ।
पुनश्च सुस्थीकरणं धृतगुग्गुलुधूपतः ।।१६।।
मंत्रस्तु ।। ॐ नमो नारायणाय अमुकस्यामुनेन सह विद्वेषं कुरुकुरुस्वाहा ।। अयुतजपात्सिद्धिः ।।

इति श्रीरावणेश्वरसम्वादे उड्डीशतंत्रे विद्वेषण-प्रयोगो नाम पंचमः पटलः ।।५।।

एक हाथ में कौआ का पंख और एक हाथ में उल्लू के पंख को लेकर नीचे लिखे मन्त्र से दोनों को पृथक्२ अभिमन्त्रित कर दोनों को मिलाकर काले डोरा से बाँध दे और फिर उनको ।।१५।। जिसके घर में गाढ़ दिया जायगा उसके घर में वैरभावहो जायगा और जबउनका वैरभाव दूर करना हो तो घी और गुग्गुल की धूप दे तो वैर दूर हो जायगा ।।१६।। किन्तु 'ॐ नारायणाय०' इत्यादि मन्त्र को दशहजार संख्या में जप कर प्रथम सिद्ध करले ।।

अथ षष्ठ पटलः

तत्रोच्चाटनम् ।। ईश्वरउवाच ।।

येनाहृतं गृहं क्षेत्रं कलत्रंधनपुत्रकम् ।
उच्चाटनं वधं कुर्य्याच्छृणु रावण यत्नतः ।।१।।

अब छठा पटल उच्चारण प्रयोग का आरम्भ होता है। शिवजी बोले कि—जिनके घर, खेत, स्त्री, धन, पुत्रों का हरण कर लिया हो

उसका उच्चाटन या वध कर देना चाहिये, अतः हे रावण! उसको तुम सावधान होकर सुनो ॥१॥

श्वेतालांगलिकामूलं स्थापयेद्यस्य वेश्मनि।
निखनेत्तु भवेत्तस्य सद्य उच्चाटनं ध्रुवम् ॥२॥

श्वेत कलिहारी की जड़ को लाकर जिसके घरमें गाढ़दी जाय तो उसका निश्चय करके उच्चाटन शीघ्र हो ॥२॥

ब्रह्मदण्डी चिताभस्म शिवलिंगे प्रलेपयेत्।
सिद्धार्थेन च संयुक्तं शनिवारे क्षिपेद्गृहे ॥३॥
उच्चाटनं भवेत्तस्य जायते मरणान्तिकम्।
विना मंत्रेण सिद्धिश्च सिद्धियोग उदाहृतः ॥४॥

मृत्तिका का एक शिवलिंग बनावे और उस पर ब्रह्मदंडी और चिता की भस्म का लेप करे और फिर सफेद सरसों के सहित वह शिवलिंग शनिवार को जिसके घरमें फेंक दिया जाय तो ॥३॥ उसका मरण पर्यन्त वहाँ से उच्चाटन हो जाता है। यह सिद्धि योग बिना मंत्र के ही सिद्धि का देने वाला है।४।

गृहीत्वौदुम्बरं कीलं मंत्रेण चतुरंगुलम्।
निखनेद्यस्य शयनं तस्योच्चाटनकं भवेत् ॥५॥

गूलर वृक्ष की एक चार अंगुल की कील लेकर जिस मनुष्य के सोने की जगह पर गाढ़ दी जाय तो उसका उच्चाटन हो जाता है ॥५॥

काकोलूकस्य पक्षांश्च यद्गृहे निखनेद्रवौ।
यन्नाम्ना मंत्रयोगेन समस्तोच्चाटनं भवेत् ॥६॥

कौआ और उल्लू पक्षी के पंख को रविवार के दिन 'ॐ नमो भगवते रुद्राय' आदि आगे के मन्त्र से नामोच्चारण पूर्वक अभिमन्त्रित करके जिसके घरमें गाढ़ दे, तो उसका सब तरह से उच्चाटन हो ॥६॥

नरास्थिकीलकं भौमे निखनेच्चतुरंगुलम् ।
तत्र मूत्रं तु यः कुर्यात् तस्योच्चाटनकं ध्रुवम् ।७।

मनुष्य की हड्डी को एक चार अंगुलकी कील लेकर मंगलवार के दिन गाढ़दे, फिर वहाँपर जो कोई मूत्र करेगा अवश्य उच्चाटनहोगा

सिद्धार्थं शिवनिर्माल्यं यद्गृहे निखनेन्नरः ।
उच्चाटनं भवेत्तस्य उद्धृते च पुनः सुखी ॥८॥
मंत्रस्तु—ॐ नमो भवगते रुद्राय करालदंष्ट्राय अमुकं पुत्रबान्धवेस्सह हन हन दह दह पच पच शीघ्रमुच्चाटय शीघ्रमुच्चाटय हुँ फटस्वाहा ठः ठः॥ अयुतजपात्सिद्धिः ।

सफेद सरसों और शिवनिर्माल्य(शिवजी से उतरे हुये फूल फल आदि) जिस मनुष्य के घर में गाढ़ दिये जाँय तो उसका उच्चाटन हो और यदि उनको उखाड़ लिया जाय तो फिर सुखी हो ॥८॥ किन्तु पहिले 'ॐ नमो भगवते रुद्राय०' यह मन्त्र दशहजार बार जप करके सिद्ध कर लेना चाहिये॥

मध्यान्हे लुठते भूमौ गर्दभो यत्र धूलिकां ।
उदङ्मुखःप्रतीच्यां तु गृहीत्वा वामपाणिना ॥९॥
यद्गृहे क्षिप्यते धूलिस्तस्योच्चाटनकंभवेत् ।
एवं सप्तदिनं कुर्यात् गृहेशोच्चाटनं भवेत् ॥१०॥
मंत्रस्तु ॥ ॐ नमो भीमास्याय अमुकगृहे उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ अयुतजपात्सिद्धिः ॥

इति श्रीरावणेश्वरसम्वादे उड्डीशतंत्रे उच्चाटन-

प्रयोगोनाम षष्ठः पटलः ।।

मध्याह्न समय जिस भूमि पर गधा लोट चुका हो उस स्थान की धूलि को उत्तर या पश्चिम की ओर मुख करके खड़ा हुआ हो बाँये हाथ से उठा ले और फिर उसको ।।९।। जिस मनुष्य के घर में फेंक दे, उसका उच्चाटन हो, इस प्रकार लगातार सात दिन तक करने से घर के स्वामी का उच्चाटन हो जाता है ।।१०।। 'ॐ भीमास्याय अमुकं' इत्यादि मन्त्र दशहजार बार जप कर सिद्ध करले और अमुक के स्थान में शत्रु के नाम का उच्चारण करे ।।

अथ सप्तमः पटलः ।।७।।

तत्र वशीकरणम् ।। ईश्वर उवाच ।।

अथाग्रे कथयिष्यामि वशीकरणमुत्तमम् ।
राजप्रजापशूनां च शृणु रावण यत्नतः ।।१।।

श्रीशिवजी बोले कि हे रावण! अब मैं राजा प्रजा और पशुओं का उत्तम वशीकरण कहता हूँ तुम ! सावधान होकर सुनो ।।१।।

प्रियंगुं तगरं कुष्ठं चन्दनं नागकेशरं ।
कृष्णधत्तूरपंचांगं समभागं तु कारयेत् ।।२।।
छायायां वटिका कार्या प्रदेया खानपानयोः ।
पुरुषो वाथ नारी च यावज्जीवं वशं नयेत् ।।३।।
सप्ताहं मंत्रितं कृत्वा मंत्रेणानेन मन्त्रवित् ।
मंत्रस्तु ।।ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय मोहय मोहय मिलि मिलि ठः ठः ।।

एकचित्त स्थितो मन्त्रीजपेन्मन्त्रतमन्द्रितः ।
त्रिशत्सहस्त्रसंख्याकं सर्वलोकवशंकरम् ।।४।।

काँगनी, तगर, कूट, चन्दन, नागकेशर और काले धतूरे का पंचांग, ये सब औषधें समान भाग में लेकर ।।२।। गोली बना कर छाया में सुखा ले और फिर पुरुष या स्त्री को खान पान में दे दी जाँय तो वह जब तक जिये तब तक वश में रहे ।।३।। मन्त्रवेत्ता पुरुष आगे लिखे मन्त्र से सात दिन तक इनको अभिमन्त्रित करले और पहिले 'ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय०' इत्यादि मन्त्र का एकाग्रचित्त होकर तीस सहस्त्र संख्या में जप करले ।।४।।

बिल्वपत्राणि संगृह्य मातुलुंगं तथैव च ।
अजादुग्धेन संपिष्ट्वा तिलकं लोकवश्यकृत् ।।५।।

वेलपत्र तथा बिजौरा को बकरी के दूध में पीसकर उसका तिलक लगावे तो लोक वश में हो जाँय ।।५।।

कुमारीकन्दमादाय विजयावीज संयुतम् ।
मस्तके तिलकं कुर्याद्वशीकरणमुत्तमम् ।।६।।

घी ग्वार की जड़ में भाँग के बीज मिलाकर मस्तक पर तिलक लगाने से उत्तम वशीकरण होता है ।।६।।

गोरोचनं वंशनेत्र मत्स्यपित्तं च कुंकुमं ।
चन्दनं काकजंघाया मूलं भागसमं नयेत् ।।७।।
वाप्यादिकजलेनैव पेषयित्वा कुमारिकाम् ।
हस्तेन गुटिकां कृत्या छायायांचविशोषयेत् ।।८।।
ललाटेतिलकं कुर्यात यः पश्यतिवशीभवेत् ।
राजद्वारे न्याययुद्धे सर्वत्र विजयी भवेत् ।।९।।

गोरोचन, वंशलोचन, मछली का पित्त, केशर, चन्दन और काकजंघा की जड़ इन सबको समभाग ले ॥७॥ और इन सब को पीस कर बावड़ी आदि जलाशय के जल से किसी कुमारी कन्या के हाथों गोली बनवा कर छाया में सुखाले ॥८॥ और फिर उसका मस्तक पर तिलक लगावे तो जो उसको देखे वह वश में हो जाय तथा उसकी राजद्वार न्यायालय आदि में सर्वत्र विजय हो ॥९॥

अथ राजवशीकरणम्

कुंकुमं चन्दनं चैव रोचनं शशिमिश्रितम् ।
गवां क्षीरेण तिलकं राजवश्यकरंपरम् ॥१०॥
चम्पकस्य तु वन्दाकं करे वद्ध्वा प्रयत्नतः ।
संगृह्य तु भरण्यृक्षे पुष्यर्क्षे वा विधानतः ॥११॥
राजानं तत्क्षणादेव मनुष्यो वशमानयेत् ।
करे सौदर्शनं मूलं वद्ध्वा राजप्रियो भवेत् ॥१२॥
ॐ ह्रींसः अमुकं मे वशमानय स्वाहा ।
पूर्वमेव सहस्रं जप्त्वाऽनेन मन्त्रेण सप्तवारमभि-मंत्रितं तिलकं कार्यम् ॥

अब राज वशीकरण कहते हैं कि—कुंकुम, चन्दन और गोरोचन इन सबमें भीमसेनी कपूर मिलाकर गौ के दूध में घोटकर तिलक लगाने से राजा अपने वश में हो जाता है ॥१०॥ चम्पा के बाँदा को भरणी अथवा पुष्य नक्षत्र में यत्न पूर्वक लाकर विधिवत् हाथ में बाँधे ॥११॥ तो उसको देखने से ही राजा और मनुष्य सब वश में हो जाते हैं तथा हाथमें सुदर्शनकी जड़ बाँधनेसे राजाका प्रिय बनजाता है ।१२। 'ॐह्रींसः अमुकं' इत्यादि मंत्रको प्रथम एकहजार बार जप कर सिद्ध करले और सात बार इसी मन्त्रसे उसको अभिमन्त्रित करके बाँधे ॥

अथ स्त्री वशीकरणम्

अथातः संप्रवक्षामि योगानां सारमुत्तम ।
यस्यविज्ञान मात्रेण नारी भवति किंकरी ॥१३॥

अब आगे मैं योगों में साररूप उत्तम योग का वर्णन करूँगा जिसके कि जानने मात्र से ही स्त्री दासी हो जाती है ॥१३॥

उशीरं चन्दनं चैव मधुना सह संयुतम् ।
गलहस्तप्रयोगोऽयं सर्वनारी प्रसाधकः ॥१४॥

खस और चन्दन को शहद में मिलाकर तिलक करे और किसी स्त्री के गले में हाथ डाल दे वही स्त्री वश में हो जाय । यह प्रयोग सब प्रकार की स्त्रियों को वश में करने वाला है ॥१४॥

चिताभस्म वचां कुष्टं कुंकुमं रोचनं समम् ।
चूर्णंस्त्रीशिरसि क्षिप्तं वशीकरणमद्भुतम् ॥१५॥

चिता की भस्म, बच, कूट, केशर और गोरोचन इन सबको समान भाग लेकर और चूर्ण बनाकर स्त्री के शिर पर छोड़ देने से यह अद्भुत वशीकरण हो जाता है ॥१५॥

१ ग्रंथांतरे

कृष्णोत्पलं मधुकरस्य च पक्षयुग्मं ।
मूलं तथा तगरजं सितकाकजंघा ।
यस्याः शिरोगतमिदं विहितं विचूर्णं ।
दासी भवेज्झटिति सा तरुणी विचित्रम् ॥१॥

कारे कमल, भौंरों के दोनों पंख, तगरमूल और सफेद कौआ-गोड़ी इन सब का चूर्ण बनाकर जिस स्त्री के शिर पर छोड़ दियाजाय तो वह शीघ्र दासी हो जाय, इसमें सन्देह नहीं ॥१॥

सव्येन पाणिकमलेन रतावसाने
यो रेतसा निजभवेन विलासिनीनाम् ।
वामंविलिंपति पदं सहसैव यस्याः
वश्येव सा भवति नात्र विकल्पभावः ।।२।।

संभोग के अन्त में जो मनुष्य वायें हाथ से अपने वीर्य को स्त्री के वायें पैर के तलुवे में मल दे तो वह स्त्री उस पुरुष के वश में हो जाती है, इसमें संदेह नहीं ।।२।।

सिंदूत्थमाक्षिक कपोतमलाँश्च पिष्ट्वा
लिंगं विलिप्य तरुणीं रमते नवोढाम् ।
साऽन्यं न याति पुरुषं मनसापि नूनं
दासी भवेदिति मनोहर दिव्यमूर्तिः ।।३।।

सेंधा लवण, शहद और कबूतर की बीटको पीसकर जो मनुष्य अपने लिंग पर लेप करके स्त्री से रमण करे तो फिर वह दिव्य मनोहर रूपवती स्त्री मन से किसी दूसरे पुरुष के पास नहीं जाती उसकी ही दासी हो जाती है ।।३।।

गोरोचनां शिशिरदीधिति शंभुबीजे
काश्मीर चन्दन युतैः कनक द्रवैश्च ।
लिप्त्वा ध्वजं परिरमत्यवलां नरो यां
तस्याः स एव हृदये मुकुटत्वमेति ।।४।।

गोरोचन, कुमुद, पारा, केशर और चन्दन इन सबको धतूरे के रस में पीसकर जो पुरुष लिंग पर लेप करके जिस स्त्रीके साथ संभोग करता है वह पुरुष उस स्त्री के हृदय में मुकुट रूप हो जाता है अर्थात् अत्यन्त प्रिय बन जाता है ।।४।।

अथ लिंगस्थूलीकरणम्

लघुसूक्ष्मेण लिंगेन नैव तुष्यंति योषितः ।
तस्मात्तत्प्रीतये वक्ष्ये स्थूलीकरणमुत्तमम् ॥५॥

छोटे और पतले लिंग से स्त्री प्रसन्न नहीं होती है इसलिये उसकी प्रसन्नता के लिये मैं अति उत्तम लिंगस्थलीकरण नामक प्रयोग वर्णन करता हूँ ॥५॥

मकुष्ठमातंग बलाबलानां बचाश्वगन्धा गजपिप्पलीनाम् । तुरगशत्रोर्नवनीतयोगाल्लेपेन लिंगं मुसलत्वमेति ॥६॥

कूठ, छोटी पीपल, दोनों खरेटी, बच, असगन्ध, गजपीपल और कनेर इन सबको कूट पीसकर इसे माखन के साथ लेप करने से लिंग मूसल के समान कड़ा हो जाता है ॥६॥

सलोध्रकाश्मीरतुरंगगन्धामातंगगन्धापरिपाचितेन ।
तैलेन बृद्धि खलु याति लिंगं वारांगनालोकमनोहरं तत् ॥७॥

लोध, केशर, असगन्ध पीपल और शालपर्णी इन सब को तेल में पका कर लिंग पर लेप करने से लिंग बढ़ता है और वह स्त्रीजनों के मन को प्रसन्न करता है ॥७॥

हयारिपत्नीनवनीतमध्ये वचा बलामागरसामयैश्च लेपेन लिंगं सहसैव पुंसां लोहोपमं स्यादिति दृष्टमेतत् ॥८॥

वच, खरेटी और पारा इन सब को पीस कूटकर और भैंस के मक्खन में मिलाकर ताजा लेप करनेसे मनुष्य का लिंग लोहदण्ड के

समान दृढ़ (कठोर) हो जाता है, यह देखा हुआ प्रयोग है ।।८।।

भल्लातकास्थिजल शूकमथाब्ज पत्रम्
सान्तर्विदाह्यमतिमान्सह सैंधवेन ।
एतद्विरूढ वृहतीफल तोयपिष्ट--
मालेपनं तुरगवद्विमलीकृतेंऽगे ।।९।।

भिलात्वे की मिंगी, सेवार और कमल पत्र इन सब को अग्निमें जलाकर और सेंधा लवण मिलाकर बड़ी कटेहली के साथ जल में पीसकरलिंगपरलेप करे तो लिंगघोड़ाकेसमान दृढ़ तथा मोटा होजाता है

बराहवचया लिंगं मधुना सह लेपयेत् ।
स्थलं दृढ़ं च दीर्घं च मासाल्लिगं प्रजायते ।।१०।।

शूकर की चर्बीको शहद के साथ मिलाकर लिंग पर लेप करने से एक महीने में लिंग स्थूल, दृढ़ और बड़ा हो जाता है ।।१०।।

अश्वगन्धाबरीकुष्ठं मांसीसिंहीफलान्वितम् ।
चतुर्गुणेन दुग्धेन तिलतैलं विपाचयेत् ।।११।।
स्तनलिंग कर्णपाणिवर्धनं भक्षणादितः ।।

असगन्ध, शतावरी, कूट जटामांसी और कटेली का फल इन सबको चौगुने दूध और तिलों के तेल में पकाकर इसके मर्दन और भक्षण करने से स्तन, लिंग कर्ण और हाथ इन सबकी वृद्धि होती है ।

तद्वच्चमुसली साज्यालेपाल्लिगस्यदार्दचकृत् ।
पिप्पली लवणक्षीर सितालेपोऽपिदीर्घकृत् ।।१२।।

इसी तरह मूसली के चूर्ण को घी के साथ लेप करने से लिंग में कठोरता उत्पन्न होती है और पीपल सेंधालवण दूध और मिश्री इन सब का सम्मिलित लेप भी लिंग को कठोर बनाता है ।।१२।।

मांसी चाक्षफलं कुष्टमश्वगन्धा शतावरी ।
तैल पक्त्वा प्रलेपेन लिंगस्थौल्यकरंध्रुवम् ।।१३।।

अथवा जटामांसी, बहेड़ा, कूट, असगन्ध और शतावरी इन सबको तेल में पकाकर लेप करने से लिंग अवश्य ही स्थूल हो जाता है ।।१३।।

सूतको ह्यश्वगन्धा च रजनी गजपिप्पली ।
सितायुक्ता जलैः पिष्ट्वामासैकं लेपयेत्तदा ।।१४।।
अद्भुत बर्द्धयेल्लिंगं योनिकर्णस्तनानि च ।

पारा, असगन्ध, हल्दी, गजपीपल और मिश्री इन सबको पीसकर जल के साथ खूब घोट ले और फिर एक महीना पर्यन्त इसका लेप करे तो योनि, कान और स्तनों की वृद्धि हो ।।१५।।

अथ पतिवशीकरणम्

रोचनं मत्स्यपित्तं च मयूरस्य शिखा तथा ।
मधुसर्पिः समायुक्तं स्त्रीवरांगविलेपनम् ।।१६।।
निभृते मैथुने भावे पतिर्दासो भविष्यति ।
रूपयौवनसम्पन्नां नान्यामिच्छेत् कदाचन ।।१७।।

गोरोचन, मछली का पित्त,मोरशिखा,शहद औरघी इन सबको मिलाकर स्त्री अपनी योनि पर लेप करे ।।१६।। और फिर पति से मैथुन करावे तो पति उसका दास हो जाय, फिर वह किसी रूपयौवन सम्पन्ना अन्य स्त्री की इच्छा नहीं करेगा ।।१७।।

कुलत्थं विल्वपत्रं च रोचनाच मनः शिला ।
एतानि समभागानि स्थापयेत्ताम्रभाजने ।।१८।।
सप्तरात्रस्थिते पात्रे तैलमेवंपचेत्ततः ।

तैलेन भगमालिप्य भर्त्तारमनुगच्छति ॥१६॥
संप्राप्ते मैथुने भर्त्ता दासो भवति नान्यथा ॥

कुलथी, बिल्वपत्र, गोरोचन और मैनसिल इन सबको बराब लेकर तांवे के किसी पात्र में ॥१८॥ सात रात्रि तक तैल में पकाक रख ले और इस तैल को अपनी योनि पर लेप करके पति के समी जाय ॥१६॥ तो उसके साथ मैथुन करके उसका पति उसका दास ह जाय यह प्रयोग असत्य नहीं है।

प्रियंगु शतपुष्पं च कुंकुमं वंशरोचना।
अश्वमूत्रेण लेपं च पुरुषाणां वशंकरम् ॥२०॥
निम्वकाष्ठस्य धूपेन धूपयित्वा भगं पुनः।
या नारी रमयेत्कान्तं सा चतंदासतां नयेत् ॥२१॥

कांगनी, सोंफ, केशर और वंशलोचन इस सबको घोड़ा के मू में पीसकर लेप बनाले और योनि पर लेप करे तो पुरुष वंश में ह जाय ॥२ ॥ नींवकी लकड़ी की घूपसे भग को धूप देकर जो स्त्री अप पति से सम्भोग करावे तो वह पति को अपना दास बना लेती है।२

ग्रन्थान्तरे

अथ स्तनदृढीकरणं स्तनवर्द्धनं च।
एरंडतैलं, शकुलस्य,तैलं,तथामविल्वस्य रसं गृहीत्वा । संमर्दयेर्दूध्वगहस्तकेनतदास्तनौ वोर्ध्वगतौ भवेताम् ॥१॥

अब प्रसङ्ग वश ग्रन्थान्तर से स्तनों के दृढ़ करने तथा बढ़ाने प्रयोग कहते हैं। अण्डी का तेल मछली का तेल और कच्चे तेल के र को लेकर हाथ से स्तनों पर मर्दन करे तो स्तन नवी । हो जाते हैं ॥१

श्रीपर्णीरसंकर्काभ्यां तैलंसिद्धतिलोद्भवम् ।
तत्तैलं तिलकेनापिस्तनस्योपरि दापयेत् ॥२॥
काठिन्यं वृद्धतांयातःपतितौ चोत्थितौचतो ॥

श्री पर्णी (खम्भारी) के रस और कर्क (केंकड़ा) को तिल के तेल में पकावे और उस तेल को यदि स्त्री अपने स्तनों पर लगावे ।२। तो स्तन कठिन और पुष्ट हो जाँय तथा गिरे हुये उठ आते हैं ।

वृद्धयाःकन्यकायाश्चाप्यबलायाः पयोधरौ ।
श्वेताब्दकुसुमं कृष्णधेनोःपयासे संस्थितम् ।
पिष्ट्वा स्तनयुगे देयं भवेत्पीनपयधरा ॥४॥

वृद्धा या कन्या के स्तन यदि ढीले हो गये हों ॥३॥ तो सफेद मोथा के फूलों को काली गौ के दूध में पीसकर दोनों स्तनों पर लेप करने से वे स्तन पुष्ट हो जाते हैं ॥४॥

वचाश्वगंधासंयुक्ता चाश्वारेःपत्रकं तथा ।
गजपिप्पलिकायुक्तं सद्योऽमलजलेन च ॥५॥
पेषयित्वा विधानेन लेपयेत्स्तनमण्डले ।
नयते तु कदाचिद्वै चाम्रतालफलं तथा ॥६॥

वच, असगन्ध, असगन्ध के पत्ते और गजपीपल इन सबको मिलाकर निर्मल जल से शीघ्र पीस कर विधि पूर्वक स्तन मण्डल पर लेप करने से गिरे हुए स्तन आम के फल तथा तालफल के सदृश ऊँचे उठ आते हैं ॥५॥६॥

गभारिपत्रनीरञ्च तत्समं तिलतैलकम् ।
समानं जलभागं च दत्वा पाकं समाचरेत् ॥७॥

तैलशेषं परिज्ञाय वस्त्रेण शोधयेत्कुचौ ।
दिवाप्रलेपनादेव लोहत्वं जायते चिरात् ॥८॥

गँभारी के पत्तों का रस और तिलों का तेल ये दोनों बराबर बराबर लेकर और इन दोनों के समान ही जल लेकर तीनों को आग पर रखकर औटावे ॥७॥ जब केवल तेल शेष रह जाय तब उस तेल को स्तनों पर लेप करे तो स्तन लोहे के समान कड़े हो जाँय ॥८॥

अथ योनिसंस्कारः

प्रक्षालयेन्निम्बकषायतोयैर्निशाज्यकृष्णागरु-
गुग्गुलूनाम् ॥ धूपेन योनि निशि धूप-
यित्वा नारी प्रमोदं विदधातिभर्तुः ॥९॥

नींब के पत्तों के काढ़े से योनि को धोवे, अथवा नींब, हलदी घी, काला अगरु और गुग्गुल इन सबकी धूप बनाकर रात में योनिको देने से स्त्री पति को प्रसन्न करती है ॥९॥

प्रक्षाल्य निंबस्य जलेन भूयस्तस्यैव वल्केन विलेपयेच्च । त्यजेत्सुर त्याश्चिरकालभूतं गन्ध-
म्बरांगस्य न संशयोऽत्र ॥१०॥

नींब के जल से योनि को धोकर और फिर नींब की छालका ही लेप करे तो बहुत समय तक योनि की दुर्गन्ध दूर हो जाय इसमें संशय नहीं है ॥१०॥

अथ लोमशातनविधिः

पलाशभस्मान्विततालचूर्णं रम्भांबुमिश्रैरुपलिप्य भूयः । कन्दर्पगेहे मृगलोचनानां रोमाणि रोहंति कदापि नैव ॥११॥

अब लोमशातन विधि वर्णन करते हैं कि—ढाक की भस्मऔर हरताल की भस्म को जल में पीसकर सदा लेप करते रहने से स्त्रियों के भग पर रोम कभी नहीं जमते ॥११॥

एकःप्रदेयो हरितालभागः पंचप्रदेया जलजस्य-भागाः । सबस्तरोर्भस्मन एव पंचप्रोक्ताश्च भागाः कदलीजलार्द्राः ॥१२॥

हरताल की भस्म १ भाग,शंखकी भस्म ५ भाग, और जल तरु (पिलखन) की ५ भाग इन सब को लेकर केले के जल में सानकर पात्र में रख ले और फिर सात दिन तक लगातार योनि पर इसका लेप करे तो कभी रोम नहीं जमें ॥१२॥

तालकं शंखचूर्णन्तु मंजिष्ठाभस्म किंशुकम् ।
समभाग प्रलेपेन रोमखंडनमुत्तमम् ॥१३॥
तालकं शंखचूर्णन्तु पिष्ट्वा च क्षारतोयकैः ।
तेनलिप्त्वाकचाघर्मेस्थितेगच्छंतितत्क्षणात् ॥१४॥
पूगपत्रोत्थनीरेण पिष्ठा गंधकमुत्तमम् ।
तेनलिप्त्वातुस्थिते घर्मे रोमखण्डनमुत्तमम् ॥१५॥

हरताल, शंखचूर्ण, मजीठ और केसू की भस्म इन सबको बराबर२ लेकर जल के साथ लेप करने से रोम नष्ट हो जाते हैं ।१३। हरताल और शंख के चूर्ण को खारे जल के साथ पीसकर धूप में बैठ कर लेप करने से शीघ्र ही योनि पर के रोम उखड़ जाते हैं ॥१४॥ सुपाड़ी वृक्ष के पत्तों के रस में गन्धक को पीसकर धूप में बैठकर लेप करने से योनि के रोम उड़ जाते हैं ॥१५॥

अथ योनिसंकोचकरणम्

निशाद्वयं पंकजकेशरं च निष्पीडच देवद्रुमतुल्य

भागम् । अनेन लिप्तं मदनातपत्रं प्रयाति संकोचमलं युवत्या ॥१६॥

दोनों हलदी, कमल, केशर और देवदारु इन सबको समान भाग पीसकर योनि पर लेप करने से स्त्री की भग संकुचित हो जाती है ।१६

सधातकीपुष्पफलत्रिकेण जम्बूत्वचासाररसं घृतेन । लिप्त्वा वरांगं मधुकेन तुल्यं वृद्धापि कन्येव भवेत्पुरन्ध्री ॥१७॥

धाय के फूल, त्रिफला (हर्र, बहेड़ा, आमला) जामुन की छाल, लोहसार, घी और मुलहटी इन सबको कूट छानकर लेप करने से बूढ़ी स्त्री भी कुमारी के समान हो जाती है ॥१७॥

इन्दीवरव्याघ्रिवचोषणानां
तुरंगमारासनयामिनीनाम् ।
लेपश्च नार्याःस्मररन्ध्रसंस्थो-
संकोचयत्याशु हठेन रन्ध्रम् ॥१८॥

नील कमल, कटेली, बच, कालीमिर्च कनेर, आसन, हल्दी इन सबके लेपको योनिपर लगानेसे स्त्रीकी भगतत्काल संकुचित हो जातीहै

या शक्रगोपं स्वयमेव पिष्ट्वा ।
विलिपति स्त्री च वरांगदेशम् ॥
अहित्य देशं कठिनं च गाढं ।
भवेन्न चात्रास्तिविचारचर्या ॥१९॥

वीर वहूटी को पीसकर जो स्त्री अपनी योनिपर लेप कर लेतो उसका रति मन्दिर (भग भाग) कठिन और गाढ़ हो जाता है ॥१९॥

अथ स्त्रीद्रावणम्

यद्यप्यष्टगुणाधिकोनिगदितःकामोऽगनानांसदानोयातिद्रवतांतथापिझटितिस्त्रीकामिनांसंगमे। तस्माद्भेषजसंप्रयोगविधिनासंक्षेपतोद्रावणंकिंचित्पल्लवयामि नीरजदृशां प्रीत्या परं कामिनाम् ॥२०॥

अब स्त्रीद्रावण कहते हैं, यद्यपि स्त्रियों का कामवेग अठगुणा होता है, किन्तु फिर भी पुरुष के संग से स्त्रियां शीघ्र स्खलित नहीं होती हैं, इसलिये सक्षेप में स्त्रियों को स्खलित करने वाली औषधियों का वर्णन किया जाताहै, जिससे कामनियों औरकामीजनोंको प्रसन्नता होती है।

सिंदूरचिंचाफलमाक्षिकानि।
तुल्यानि यस्याः मदनातपत्रे।
प्रलिप्य तस्याः पुरुषप्रसंगा--
त्प्रागेव वीर्यंच्युतिमातनोति ॥२१॥

सिंदूर, इमली का फूल और शहद ये सब समान भाग पीसकर लेपकर स्त्री के संग संभोग करेतो स्त्री शीघ्र स्खलित होजाती है ॥२१॥

व्योषं रजः क्षौद्रसमन्वितं वा
क्षिप्तं यदि स्यात्स्मरयंत्रगेहे।
द्रुता भवेत्सा सहसैव नारी
दृष्टः सदायं किलयोगराजः ॥२२॥

त्रिकुटा, (सोंठ, मिर्च, पोपल) के चूर्ण को शहद के साथ मिला कर योनि में रख दे और फिर पुरुष प्रसंग करे तो स्त्री एकदम द्रवीभूत हो जाती है, यह योगराज सदा सिद्धि देने वाला देखा गया है ॥२२॥

पिप्पलीचन्दनंचैव बृहतीपक्वतिंतिडी ।
एषां लिंगे प्रलेपेन द्रवेन्नारी न संशयः ॥२३॥

पीपल, चन्दन, कटेहली, पक्की इमली इनसबको लिंगपर लेप करने से स्त्री शीघ्र स्खलित हो जाती है इसमें सन्देह नहीं ॥२३॥

अगस्तिपत्रद्रवसंयुतेन
मध्वाज्यसंमिश्रितटंकणेन ।
लिप्त्वा ध्वजं यो रमतेंऽगनानां
स शुक्रमाकर्षति शीघ्रमेव ॥२४॥

अगस्त के पत्तों के रस में घी, शहद और सुहागा पीसकर लेप बना कर और उसे लिंग पर लेप करके जो पुरुष स्त्रियों से संभोगकरते हैं तो इससे स्त्री शीघ्र ही द्रवित हो जाती है ॥२४॥

सलोध्रधत्तूरकपिप्पलीनां ।
क्षुद्रोषणक्षौद्रविमिश्रितानाम् ।
लेपेन लिंगस्य करोतिरेत--
श्च्युतिं विपक्षप्रमदाजनस्य ॥२५॥

लोध, धतूरा, पीपली, कटेहली और पीपलामूल इन सबके चूर्ण में शहद मिलाकर लिंग पर लेप करने के बाद जो मनुष्य स्त्री से रति करता है, तो स्त्री अत्यन्त शीघ्र स्खलित हो जाती है ॥२५॥

तुरगसलिलमध्ये भावितं क्षेत्रमाषं ।
मरिचमधुकतुल्यां पिप्पलीं पेषयित्वा ॥
परिरमति विलिप्य स्वीयलिंगं नरो यः ।
प्रभवति वनितानां कामकल्लोलमानं ॥२६॥

उड़द, मिर्च मुलहठी, पीपल इन सब को समान भाग लेकर

और असगन्ध के रसमें पीसकर इस लेप को जो पुरुष अपने लिंग पर लेप करके जिस स्त्री के साथ संभोग करे तो वह स्त्री अति शीघ्र स्खलित हो जाती है ॥२६॥

विल्वपुष्पं सकर्पूर मुण्डी पुष्पं च पोषितम् ।
लिंगलेपेन रामाणां द्रावो भवति संगमे ॥२७॥

बेल का फूल, कपूर और मुण्डीके फूल ये तीनों औषधि पीसकर लिंगपरलेप करके प्रसंग करने पर स्त्री अतिशीघ्र स्खलित हो जाती है ।

वृहतीफलमूलानि पिप्पल्यो मरिचानिच ।
मधुरोचनया सार्द्धं लिंगलेपे द्रवन्ति ताः ॥२८॥

कटेली के फल और जड़ तथा पीपल, काली मिर्च, शहद और गोरोचन इन सबके लेपको कामध्वजपर लगानेसे स्त्रीस्खलितहोजातीहै

मरिचकनकबीजैः पिप्पलीलोध्रयुक्तै-
र्विमलमधुविमिश्रैर्मानवो लिप्तलिंगः ॥
जयति रतिविलासे कष्टसाध्यां च नारीं ।
समुचितरतिसगां संविदध्यादवश्यम् ॥२९॥

काली मिर्च, धतूरे के बीज, पीपर और लोध इन सब का चूर्ण बनाकर और शुद्ध शहद में मिलाकर कामपता पर लेप करे तो कामी पुरुष रतियुद्धमें कष्टसे जीतने योग्य स्त्री कोभी पराजितकरसकता है ।

सर्वेषां द्रवयोगानां मंत्रराजं मयोदितम् ।
लपेदष्टोत्तरशतं तत्र योगस्त सिद्धये ॥३०॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय स्त्रीणां मदं द्रावय द्रावयः ठः ठः इतिद्रावणम् ॥ इति श्रीराव-

णेश्वरसंवादे उड्डीशतंत्रे वशीकरणप्रयोगो नाम सप्तमः पटलः ।।७।।

इन सब स्खलित होने के योगों का एक मन्त्र मैंने वर्णन किया है, उसे इस योग की सिद्धि के लिए एकसौ आठ बार जपे ।।३०।। 'ॐ नमो भगवते इत्यादि ।।४।।

अथाष्टमः पटलः

तत्राकर्षणम् ।। ईश्वरउवाच ।।

अथाग्रे कथयिष्यामि आकर्षणविधिं वरम् ।
यस्य विज्ञानमात्रेण सत्यमकर्षणं भवेत् ।।१।।

अब आठवाँ पटल आकर्षण प्रयोगों का प्रारंभ होता है, श्रीशिवजी बोले -अब मैं आगे सुन्दर आकर्षण विधि को वर्णन करूँगा जिसकेकि जानने मात्र से हो उत्तम आकर्षण होता है ।।१।।

मानुषासुरदेवाश्च सयक्षोरगराक्षसाः ।
स्थावरा जंगमाश्चैव आकृष्टास्तेन संशयः ।।

मनुष्य, असुर, देवता, यक्ष नाग राक्षस और स्थावर जंगम ये सभी जीव इन प्रयोगों से निसन्देह आकर्षित होते हैं ।।

गृहीत्वार्जुनवन्दाकमाश्लेषायां समाहितः ।
अजामूत्रेण संपिष्ट्वा निक्षिपेन्मस्तकोपरि ।।३।।
नारी वा पुरुषो यस्य सुतो वा पशुरेव च ।
आकृष्टः स्वयमायाति सत्यंसत्यंवदाम्यहम् ।।४।।

अर्जुनवृक्ष के वाँदा को आश्लेषा नक्षत्र के दिन सावधानता पूर्वक ले आवे और बकरी के मूत्र में पीसकरपशु के शिर पर छोड़ दे तो वह स्वयं आकर्षित होकर आजाता है.यह प्रयोगमैं सत्य कहताहुँ।४।

सूर्यावर्तस्य मूलं तु पंचम्यां ग्राहयेद्बुधः ।
तांबूलेन समं दद्यात्स्वयमायाति भक्षणात् ॥५॥

तन्त्रवेत्ता पुरुष हुलहुल वृक्षकी जड़ को पंचमी तिथि में लाकर पान के साथ जिस स्त्री या पुरुष को खिलादे तो वह आकर्षित होकर स्वयं ही आ जाता है ॥५॥

साध्यवामपदस्थां तां मृत्तिकामाहरेत्ततः ।
कृकलासस्य रक्तेन प्रतिमां कारयेत्ततः ॥६॥
साध्यनामाक्षरं तस्यास्तद्रक्तैर्विलिखेद्धृदि ।
मूत्रस्थाने च निखनेत्सदा तत्रैव मूत्रयेत् ॥७॥
आकर्षयेत्तां नारीं सतयोजनसंस्थिताम् ।
इति श्रीरावणेश्वरसम्वादे उड्डीशतंत्रे ।
आकर्षणप्रयोगोनामाष्टमः पटलः ॥८॥

जिसका आकर्षण करना हो उसके बाँये पैर के तले की मिट्टी लेकर गिंगिट के रुधिर से उस मिट्टी का पुतला बनावे ॥६॥ फिर उस पुतली के हृदय में उस गिंगिट के रुधिर से जिसका आकर्षण किया जाय उस प्राणी के नामाक्षरों को लिखे और मूत्र स्थान पर गाढ़ कर सदा उसी स्थान पर मूत्र करे ॥७॥ तो सौ योजन पर स्थित हुई नारी भी आकर्षित हो जाती है ।

अथ नवमः पटलः

तत्र यक्षिण्यादिसाधनम् ॥ ईश्वरउवाच ॥
अथाग्रे कथयिष्यामि यक्षिण्यादिप्रसाधनम् ।
यस्य सिद्धौ नराणां हि सर्वे संति मनोरथाः ॥

अब नवम पटल प्रारम्भ होता है। शिवजी बोले कि-अब आगे मैं यक्षिणी आदि के साधन को भली भाँति कहूँगा, जिसके सिद्ध होने से मनुष्यों के सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होते हैं ॥१॥

अथ संक्षेपतोयक्षिणीसाधनप्रकारः ।

मन्त्रविद् यक्षिणीनांतुध्यानंकुर्यात्समाहितः ।
भगिनीमातृपुत्रीस्त्रीरूपन्तुल्यं यथेप्सितम् ॥२॥

तत्त्ववेत्ता साधक को अपनी इच्छा के अनुसार बहिन, माता, पुत्री वो स्त्री के समान मानकर यक्षणियों के स्वरूप का सावधानता से ध्यान करना चाहिये असावधानी होने से सिद्धि प्राप्त नहीं होती ॥२॥

भोज्यंनिरामिषंचान्नंवर्ज्यं ताम्बूलभक्षणम् ।
उपविश्याजिनादौ च प्रातःस्नात्वा न कस्पृशेत् ॥

यक्षिणी के साधन करने में माँस रहित अन्न खाय और न पान खाय, प्रातःकाल स्नान करके और मृगचर्म पर बैठकर फिर किसी को न छुये ॥३॥

नित्यकृत्यं च कृत्वा तु स्थाने निर्जनके जपेत् ।
यावत्प्रत्यक्षतां यांति यक्षिण्योवांक्षितप्रदाः ॥

अपना नित्यकर्म करके निर्जन स्थान में बैठकर जप करे, जब तक इच्छित फल देने वाली यक्षिणी दर्शन न दे तब तक जप करता रहे, यही प्रकार सब यक्षणियों के साधन का है ॥४॥

तत्रादौ महायक्षिणी साधनम्

मंत्रस्तु ॥ ॐक्लीं ह्रीं ऐं ॐ श्रीमहायक्षिण्यै सर्वैश्वर्यप्रदात्र्यै नमः ॥

इति मंत्रस्य च जपं सहस्त्रत्रयसम्मितम् ।

कुर्याद्बिल्व समारूढो मासमात्रमतन्द्रितः ॥५॥
मद्यामिषबलिं तत्र कल्पयेत्संस्कृतं पुरः ।
नानारूपधरा यक्षी क्वचित्तत्रागमिष्यति ॥६॥
तां दृष्ट्वा न भयं कुर्याज्जपेत्सक्तमानसः ।
यस्मिन्दिने बलिं भुक्त्वा वरं दातुं समर्थयेत् ॥७॥
तदा वरान्वैवृणुयात्तांस्तान्वै मनसेप्सितान् ।
धन मानयितुं ब्रूयादथवा कर्णवार्तिकीम् ॥८॥
भोगार्थमथवा ब्रूयान्नृत्यंकर्तुमथापि वा ।
भूतानानयितुं वापि स्त्रियमानयितुं तथा ॥९॥
राजानं वा वशीकर्तुमायुर्विद्यांयशोवलं ।
एतदन्यद्यदीप्सेत साधकस्तत्तु याचयेत् ॥१०॥
चेत्प्रसन्ना यक्षिणी स्यात्सर्वंदद्यान्न संशयः ।
अशक्तस्तु द्विजैःकुर्यात्प्रयोगं सुरपूजितम् ॥११॥
सहायानथवा गृह्य ब्राह्मणान्साधयेद् व्रतम् ।
तिस्त्रःकुमारिकाभोज्याःपरमान्नेन नित्यशः ॥
सिद्धे धनादिके चैव सदा सत्कर्म आचरेत् ।
कुकर्मणिव्ययश्चेत्स्यात्सिद्धिर्गच्छतिनान्यथा ॥

प्रथम यहाँ यक्षिणी के साधन का प्रयोग वर्णन किया जाता है। 'ॐ क्लीं, ह्रीं०' इत्यादि मन्त्र को तीन हजार संख्या में प्रतिदिन बेल वृक्ष पर बैठकर एक मास तक निरालस्यता से जपै और मदिरा माँस की बलि वहाँ पहिले ही से रखले, क्योंकि अनेक रूप धारण

करने वाली यक्षिणी न जाने कब आ जाय और जब यक्षिणी आवे तब उसे देख कर डरे नहीं जप में अपने मन को लगाये रक्खे, जिस दिन बलि ग्रहण करके वर देने को तैयार हो तब जिस वर की इच्छा हो वही वर माँग ले धन लाने का वर अथवा कान में बात कह देने का या भोगने की कहे या नाच दिखाने की कहे अथवा किसी प्राणी को लाने की तथा स्त्री को लाने की कहे। अथवा राजा को वश करने का वर मांगे या आयु विद्या, यश या बल की वृद्धि माग ले, अथवा जो कुछ इच्छा हो वह माँग ले ॥१०॥ अगर यक्षिणी प्रसन्न हो जाती है तो निसन्देह सब कुछ दे देती है समर्थ न हो तो यह देव पूजित प्रयोग ब्राह्मणों के द्वारा करावे ॥११॥ अथवा ब्राह्मणों को साथ लेकर उनकी सहायता से इस व्रत का (प्रयोग) का साधन करे और प्रतिदिन तीन कन्याओं को परमान्न (खीर आदि) का तृप्ति पर्यन्त भोजन करावे ॥१२॥ यक्षिणी की प्रसन्नता प्राप्त हुआ धन यदि कुकर्म में लगाया है तो इसमें सन्देह नहीं कि सिद्धि भ्रष्ट हो जाती है ॥१३॥

अथ धनदा यक्षिणी साधनम्

अश्वत्थवृक्षमारुह्य जपदेकाग्रमानसः ।
धनदायीयक्षिणी तो धनं प्राप्नोति मानवः ॥१४॥
मंत्रस्तु ॥ॐ ऐंह्रीं श्रीधनं धनं धनं कुरुकुरु स्वाहा ।
अयुत जपेन सिद्धिः ।

अब धनदार्या यक्षिणी के सिद्ध करने का प्रयोग कहते हैं। पीपल वृक्ष ऊपर बैठकर एकाग्रचित्त से जप करे तो मनुष्य को धन दायी यक्षिणी द्वारा धन प्राप्त होता है ॥१४॥

ओं ऐं ह्रीं श्रीं० इत्यादि मन्त्र को दशहजार जपे ।

चूतवृक्षं समारुह्य जपेदेकाग्र मानसः ।

अपुत्रो लभते पुत्रं नान्यथा मम भाषितम् ॥१५॥
मंत्रस्तु ॥ ॐ ह्रीं ह्रींहूँ रं पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा ।
अयुतजपेन सिद्धिः ।

आम के वृक्ष पर बैठ कर एकाग्रता से जप करे तो अपुत्र पुरुष को पुत्र प्राप्ति हो यह हमारा कथन असत्य नहीं है ॥१५॥ पहिले 'ॐ ह्रीं ह्रीं हूँ' । इत्यादि मन्त्र को हजार बार जपकर सिद्ध करले ।

अथ महालक्ष्मी यक्षिणी साधनम्

वटबृक्षसमारूढ़ो जपेदेकाग्रमानसः ।
महालक्ष्मीयक्षिणी च स्थिरालक्ष्मीश्च जायते ॥१६
मंत्रस्तु । ॐह्रींक्लींमहालक्ष्म्यैनमःअयुतजपात्सिद्धिः

बटवृक्ष के ऊपर वैठकर एकाग्रचित्त से महालक्ष्मी यक्षिणीका जप करे तो लक्ष्मी स्थिर हो ॥१६॥ 'ॐ ह्रीं क्लीं' इत्यादि मन्त्र को दश हजार संख्या में जपे ।

अथ जया यक्षिणी साधनम्

अर्कमूलंसमारूढ़ो जपेदेकाग्रमानसः ।
यक्षिणीं च जयानाम सर्वकार्यकरीमता ॥१७॥
मंत्रस्तु ॥ ॐ ऐं जयायक्षिण्यै सर्वकार्यसाधनं कुरु कुरु स्वाहा ॥ अयुतजपात्सिद्धिः

अब जयायक्षिणी के सिद्धि करने की विधि कहते हैं कि— आकवृक्ष की जड़पर बैठकर सावधानता पूर्वक इसको जपे तो जया नाम की यक्षिणी सब कामों को पूर्ण करे ॥१७॥ ॐ ऐं जयायक्षिण्यै० मन्त्र को दश हजार बार जपे तो सिद्धि हो ।

गुप्तेन विधिना कार्यं प्रकाशं नैव कारयेत् ।
प्रकाशे बहु विघ्नानि जायते नात्र संशयः ।।१८।।
प्रयोगश्चानुभूतोऽयं तस्माद्यत्नंसमाचरेत् ।
निर्विघ्नेन विधानेनभवेत्सिद्धिरनुत्तमा ।।१९।।

यह यक्षिणी साधन प्रयोग गुप्तरीति करनाचाहिये, इसे प्रकाशित न करे, प्रकाशित करने से उसके विघ्न प्रकट हो जाते हैं इसमें सन्देह नहीं ।।१८।। यह यक्षिणी साधन प्रयोग अनुभव किया हुआ है अतः बड़े यत्न से साधन करे, निर्विघ्नता पूर्वक विधिवत् करने पर ही उत्तम सिद्धि प्राप्त होती है ।।१९।।

अथ भूतनी साधनम्

सा भूतिनी कुण्डलधारिणी च । सिंदूरिणी चाप्यथ हारिणी च ।। नटी तथा चातिनटी च चेटिका । कामेश्वरी चापि कुमारिका च ।।२०।।

अब भूतिनी का साधन बताते हैं कि—वह भूतिनी, कुण्डल धारिणी, सिंदूरिणी, हारिणी, नटी, अतिनटी,चेटिका और कामेश्वरी व कुमारिका आदि अनेक रूप धारण करने वालीहै और अपने साधक की इच्छानुसार स्त्री, माता और बहिन भाव से उसकी कामनाओं को पूर्ण करती रहती है। किन्तु आगे लिखे इन योगिनियों के मन्त्र में 'अमुकी' पद के स्थान पर भूतिनी,कुण्डलधारिणी आदि जिस योगिनी को सिद्ध करना अभीष्ट हो उसी योगिनी का नामोच्चारण करके जप करना चाहिये ।।२०।।

भूतिनीमंत्रः ।। ॐ ह्रौं क्रूं क्रूं क्रूं कटु कटु अमुकी देवी वरदा सिद्धिदा च भव ॐ अः ।

चम्पावृक्षतले रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
पूजनं विधिनाकृत्वा दद्याद्गुग्गुलधूपकम् ॥२१॥

'ॐ ह्रौं क्रूं क्रूं क्रूं' इत्यादि मन्त्र को रात्रि समय चम्पा वृक्ष के नीचे बैठकर विधिपूर्वक पूजन कर गुग्गुल की धूप दे और आठ वार जाप करे ॥२१॥

सप्तमेऽन्हि निशीथेच समागच्छति भूतिनी ।
दद्यात्गन्धोदकेनार्घ्यंतुष्टा मात्रादिकाभवेत् ॥२२॥
मातेत्यष्टादशानां च वस्त्रालंकारभोजनम् ॥
भगिनी चेत्तदा नारीं दूरादाकृष्यसुन्दरीम् ॥२३॥
रसं रसांजनं दिव्यं विधानं च प्रयच्छति ।
भार्या च पृष्ठमारोप्य स्वर्गं नयतिकामिता ।
भोजनंकामिकं नित्यं साधकाय प्रयच्छति ॥२४॥

सातवें दिन आधी रात भूतिनी आदि देवी जिसके कि नाम से मन्त्र का जप किया है, वह आती है उस समय उसके लिये चन्दन जल से अर्घ दे, इस प्रकार देवी प्रसन्न होकर साधक की इच्छा के अनुसार माता आदि भाव से प्रकट होती है ॥२२॥ माता होने पर अठारह मनुष्यों को वस्त्र आभूषण, भोजन देती है, बहिन बन कर सुन्दरी स्त्री लाकर समर्पण करती है ॥२३॥ नाना प्रकार के रसायन, भोजन पदार्थ तथा सुन्दर वस्तुओं को समर्पण करती है, यदि स्त्री रूपसे प्रकट होती है तो साधक को अपनी पीठ पर चढ़ाकर स्वर्गलोक ले जाती है तथा भोजन और मनोरथों को सिद्ध करके प्रतिदिन साधक को प्रसन्न करती रहती है ॥२४॥

रात्रौ देवालयं गत्वा शुभां शय्यां प्रकल्पयेत् ।
जातीपुष्पेण वस्त्रेण चन्दनेन च पूजयेत् ॥२५॥

धूपं च गुग्गुलं दत्वा जपेदष्टसहस्त्रकम् ।
जपान्ते शीघ्रमायाति चुम्बत्यालिंगयत्यपि ।।२६।।
सर्वालंकार संयुक्तासम्भोगादिसमन्विता ।
कुबेरस्य गृहादेव द्रव्यमाकृष्य यच्छति ।।२७।।

रात्रि में किसी देव मन्दिर में जाकर एक उत्तम शय्या सजावे और उस पर चमेली के फूल, वस्त्र और सफेद चन्दन से पूजा करके मन्त्र को जपे । जप की समाप्ति में शीघ्र ही देवी आती है और साधक का चुम्बन आलिगन करती है ।।२६।। सर्वालंकार विभूषित वह देवी पत्नी रूप से सम्भोगादि करने के बाद साधक को कुबेर के गृह से द्रव्य लाकर देती है ।।२७।।

अथ शव साधनम् तथा श्मशान साधनम्

ईश्वरोवाच ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि शवसाधनमुत्तमम् ।
श्मशानसाधनं यत्तु तदाश्चर्यकररूपरम् ।।२८।।
यस्य विज्ञानमात्रेण सिद्धो भवति साधकः ।

शिवजी बोले कि—अब आगे मैं उत्तम प्रकार से शव साधन कहताहूँ जिसको श्मशान साधन भी कहतेहैं, जोकि अत्यन्त ही आश्चर्य करने वाला है ।२८। तथा जिसके जान लेने से साधक सिद्ध हो जाता है

श्मशानालयभागत्य उपवासी जितेन्द्रियः ।
अमायां भौमवारे च शवोपरि समारुहेत् ।।२९।।
अयुतं प्रजपेन्मंत्रं मौनी निर्भयरूपतः ।
शवसाधनमेतत्तु सिद्ध्यत्येव न संशयः ।।३०।।

यद्यदाज्ञापयति तत्तत्कुरुते सुविनिश्चितम् ।
जपान्ते पूजनं कार्यं श्मशाने निर्जने तथा ॥
षोडशैरुपचारैस्तुश्यामां श्यामालसुन्दरीम् ॥३२॥
मंत्रस्तु-ॐह्रींॐशवमेनं साधय साधय स्वाहा ।

मंगलवार के दिन अमावस्या को साधक उपवासी तथा जितेन्द्रिय होकर श्मशान में रात को जाय और वहाँ पर मुर्दा पर बैठ जाय ॥२९॥ और दस हजार संख्या में मौन होकर निर्भयता से मंत्र जपे, बस यही शव साधन है, इसके करने से अनेक कार्य सिद्ध होते हैं इसमें सन्देह नहीं ॥३०॥ साधक उस शव को जो आज्ञा देता है उसको अवश्य करता है जप की समाप्ति में श्मशान तथा निर्जन वन में ।३१। श्यामलसुन्दरी का षोडस उपचार से पूजन करे यही श्मशान साधन है । ॐ ह्रीं ॐ शवमेनं साधय२ स्वाहा' यह इसका मन्त्र है ॥३२॥

अथ पादुका साधनम्

काकजंघा सिताग्राह्यागृध्रस्य च वसा तथा ।
अश्वगंधासमायुक्ताह्युष्ट्रीक्षीरेण पेषयेत् ॥३३॥
अनेन लिप्तपादस्तु योजनानां तिथि व्रजेत् ।
मंत्रस्तु-ॐनमो भगवते रुद्राय भूतवेतालत्रासकाय शंखचक्रगदाधरायहनहन महते चन्द्र युताय हुँ फट् स्वाहा । यक्षजपात्सिद्धिर्भवति अनेन सप्तवारमभिमंत्र्य प्रलेपयेत् ॥

अब पादुका साधन कहते हैं कि--सफेद काकजंघा, गीध की चर्बी और असगन्ध ये सब औषधें ऊँटनी के दूध में पीसे ॥३३॥ और फिर उसको लेकर चरणतल में लेप करे, तो पंद्रह योजन तक बिना

थकावट के जा सकता है। 'ॐ नमो भगवते०' इत्यादि मन्त्र को एक लक्ष जपै तो सिद्धि प्राप्त हो, सिद्ध हो जाने पर सात बार लेप को अभिमन्त्रित करके लेप करे।

श्वानं मार्जरनकुलं पित्तं ग्राह्यं समं समम्। योजनानां तिथिं गत्वाकाकमांसंरसांजनम्।३४।पिष्ट्वा पादप्रलेपेन पुनरावर्तते तथा ३५॥ मन्त्रस्तु-ॐ नमो भगवते रुद्राय मांसे संमले काले खले घोर प्रवर सरसरस्वाहा॥ पूर्वोक्तेन समंसिद्धिः॥

कुत्ता, बिलाव और न्योला इन सबका पित्त समान भाग लेकर लेपकरे तो पंद्रह योजन जाय और वहाँपर फिर कौआ का माँस रसांजन में मिलाकर पीसे और उसका लेप चरण तल में करे तो फिर यों का यों ही उस समय वहाँ से लौट आवे।।३४।३५।। 'ॐनमो भगवते० इत्यादि मन्त्र को पूर्वोक्तरीति के अनुसार जप कर सिद्ध कर ले॥

काकस्य हृदयं नेत्र जिह्वां चैव मनःशिलां।
सिन्दूरंगैरिकं चैव अजमारीं च मालतीम्॥
समां रुद्रजटांचैवविदार्या सह पेषयेत्।
तल्लिप्तपादसहसा योजनानां शतं व्रजेत्॥३७॥
बलीपलितनिर्मुक्तोयावदाभूतसंप्लवम्॥
मंत्रस्तु-ॐ नमो भगवतेरुद्राय हरित गदाधराय त्रासय त्रासय चालय चालय स्वाहा॥३८॥

कौआ का हृदय, दोनों नेत्र और जिह्वा, मैनसिल, सिन्दूर गेरू सेंधा लवण, चमेली॥३६॥ और रुद्रजटा, विदारीकन्द ये सब समान भाग लेकर महीन पीसकर लेप बनावे और उस लेप को चर

तल पर लगावे तो सौ योजन चला जावे ॥३७॥ तथा वह पुरुष बहुत वर्षों तक बलवान और बुढ़ापे से रहित रहा आवे । ॐ नमो भगवते०' इत्यादि मन्त्र मूल में है उसका जप पूर्वोक्तवत् करे ॥३८॥

अथ मृतसंजीवनीविद्या

ईश्वरोवाच

मृतसंजीवनी विद्यां कथयिष्यामि प्रेमतः ।
लिंगमंकोलबृक्षाधः स्थापयित्वाप्रपूजयेत् ॥३९॥
नवं घटं च तत्रैव पूजयेल्लिंगसन्निधौ ।
वृक्षं लिंगं घटं चैव सूत्रेणैकेन वेष्टयेत् ॥४०॥

शिवजी बोले कि—अब मैं प्रेमसे मृत संजीवनी विद्याको कहता हूँ अंकोल वृक्ष के नीचे शिवलिंग स्थापन करके पूजा करे ॥३९॥ शिवलिंग के समीप ही एक नवीन घट स्थापित करे, और फिर उस वृक्ष लिंग तथा घट तीनों को एक ही सूत्र से लपेट दे ॥४०॥

चतुर्भिः साधकैर्नित्यंप्रणिपत्य क्रमेणतु ।
एवं द्वेद्वेदिने कुर्यादघोरेण समर्चयेत् ॥४१॥
पुष्पादिफलपाकांतं साधनं कारयेद्बुधः ।
फलानिपक्वान्यादाय पूर्वोक्तं पूरयेदघटम् ॥४२॥

चार साधकों के सहित प्रतिदिन क्रम से प्रणाम करे वह क्रम इसप्रकारहै कि-अघोरेभ्योऽघोरेभ्यो० इत्यादि मन्त्रको जपे दोदो दिन हरएक साधक शंकर भगवान का ध्यान करे।४१। जबतक उस वृक्ष में फूल फल लगें तब तक इस प्रयोग को करे, जब फल परिपक्व होजायँ तब बुद्धिमान् पुरुष उसके फलों से घट को भरे ॥४२॥

तंघटं पूजयेन्नित्यं गन्धपुष्पाक्षतादिभिः ।

वर्जनन्तुतः कुर्याद्बीजानां घर्षयेन्मुखम् ॥४३॥
तन्मुखं बृहणंवृत्तंकिंचित्किञ्चित् प्रलेपयेत ।
विस्तीर्णमुखभागान्तः कुम्भकारकरोद्भवम् ॥४४॥

उस घट का नित्य गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि से पूजन करे और फिर सब बीजों को भूमि से पृथक करके उनसे घोड़ा के मुख को ढक दे ॥४३॥ जब उन वीजोंका मुख बढ़ने लगेतो उनमें कुछ सुहागेका चूर्ण डाल कर कुम्हार के यहाँ से एक दूसरा बड़े मुख का वर्तन लेआवे ४४

मृत्तिकालेपयेत्तत्रतानिवीजानि रोपयेत् ।
कुण्डल्या कारयोगेन यत्नादूर्ध्वमुखानिवै ॥४५॥
शुष्कं तं ताम्रपात्रोर्द्ध भाण्डंदेयमधोमुखम् ।
आतपे धारयेतैलं ग्राहयेत्तंचरक्षयेत् ॥४६॥
मासार्द्धं चैवतैलंतु मासार्द्ध तिलतैलकम् ।
नस्यन्देयंमृतस्यैवकालदष्टस्य तत्क्षणात् ॥४७॥
मंत्रस्तु—ॐअघोरेभ्योथघोरेभ्यो घोर घोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वसर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः उक्तयोगस्यायं मंत्र ॥

और उस पर रख कर मिट्टी का लेप करके बीजों को कुण्डली के आकार बोय दे ॥४५॥ जब वह सूख जाय तब उस ताँबे के पात्र को नीचे को मुख करके रखदे और उसे आँच पर रखकर उससे तैल खींचे फिर तेल की रक्षा करता रहे वह तेल इधरउधर न टपकनेपावे खिंच आने पर ॥४६॥ आधा माशा वह तेल आधा माशा तिल का तेल ले और फिर इन दोनों को नस्य दे तो कालरूप राक्षस का काटा पुरुष क्षणमात्र में जीवित हो जाता है ॥४७॥

अथ विद्याधरसिद्धि

मायाबीजं तथा गोगोपतये तदनन्तरम् ।
एतन्मंत्रं शुचिर्भूत्वा निशीते तु जपेत्सुधीः ॥४८॥
त्रिसहस्रं जपेन्नित्यं ततः सिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ।
गन्धर्वशब्दविद्भूत्वा बलवान्पुत्रवान्भवेत् ॥४९॥

इति श्रीरावणेश्वरसम्वादे उड्डीशतंत्रे यक्षिण्यादि साधनो नाम नवमः पटल ॥९॥

अब विद्याधर सिद्धि का वर्णन करते हैं कि - ॐ ह्रीं गो गोपतये' इस मन्त्र को पवित्र होकर बुद्धिमान साधक आधी रात के समय प्रतिदिन तीन हजार संख्या में जप करे तो निश्चय सिद्धि हो इस मन्त्र के प्रभाव से गन्धर्व के शब्द को जानने में समर्थ होकर वह साधक धनवान् तथा पुत्रवान् हो जाता है ।

अथ दशमः पटलः ॥१०॥

तत्रेन्द्र जालकौतुकम् ॥ ईश्वरउवाच ॥

इन्द्रजालं प्रवक्ष्यामि शृणु सिद्धि प्रयत्नतः ।
येन विज्ञातमात्रेण ज्ञायते सर्वकौतुकम् ॥

श्रीशिवजी बोले-अब जाल विद्या को वर्णन करूँगा । हे रावण ! तुम उस सिद्धि को सावधान होकर सुनो जिसके कि-जानने मात्र से ही सब कौतुकों का ज्ञान हो जाता है ॥१॥

आदौ भूतकरणम्

आदौ भूतकरं वक्ष्ये तच्छृणुष्व समासतः ।

भल्लातकरसे गुंजां विषं चित्रकमेव च ।।१।।
कपिकच्छुकरोमाणि चूर्णं कृत्वा प्रयत्नतः ।
एतच्चूर्णप्रदानेन भूतीकरणमुत्तमम् ।।२।।

हे रावण ! अब मैं संक्षेप से भूत करण प्रयोग वर्णन करता हूँ उसे तुम सुनो—भिलावे के रस में घुंघुची, विष, चीता ।।१।। और केंवाच के रोम इन सब को महीन पीसकर यह चूर्ण जिसको दे दिया जाय उस पुरुष को भूत पकड़ लेता है ।।२।।

तस्य रूपं प्रवक्ष्यामि ज्ञातं स्याद्यैस्तुलक्षणैः ।
अंगानि धिधिमायंते मूर्च्छाचैव मुहुर्मुहुः ।।३।।
एतद्रूपं भवेद्यस्य तद्भूतावेशलक्षणम् ।

अब उसके रूप का वर्णन करता हूँ जिन लक्षणों से कि वह जाना जाता है, सब अंग उसके घिमघिमाने लगे और बार२ मूर्छाआवै ।।३।। ऐसा जिसका स्वरूप हो जाय उसे भूतावेश लक्षणयुक्त जानना ।

चिकित्सां तस्यवक्ष्यामियेन सम्यद्यपे सुखम् ।
उशीरं चन्दनं चैव प्रियुगुं तगरं तथा ।
रक्तचंदनकुष्ठं च लेपो भूतविनाशक ।।४।।
।। मन्त्रस्तु ।। ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कुहुनीं कुर्वती स्वाहा ।। शताभिमंत्रितं कृत्वा ततः स्वस्थो भविष्यति ।।

अब उसकी चिकित्सा वर्णन करता हूँ जिसके कि करने से सुख प्राप्त होता है ।।४।। खस, चन्दन, काँगनी, तगर तथा लालचन्दन को कूटकर इन सब औषधियों का लेप बाधा को नष्ट कर देता है ।।५।। 'ॐ नमो भगवते' इत्यादि मन्त्र से सौ बार झाड़ा देनेसे स्वस्थ होवेगा

अथ ज्वर वारणम्

श्रीवेष्टकं घृतं हिंगु देवदारु गवाक्षि च ।
गोवालाःसर्षपाःकेशाःकटुकीनिम्बपल्लवाः ।
द्वे वृहत्यौवचाचव्या कार्पासास्थिरुषायवाः ।
छागरोमाणि मायूरपिच्छमेकत्रमेलयेत् ।।७।।

अब ज्वर निवारण यत्न लिखते हैं कि—लोबान, घी हींग, देवदारु, इन्द्रायणी, गोदन्ती, सुगन्धवाला, सरसों, केशर, कुटकी, नीम के पत्ते ।।६।। दोनों खटाई, वच, चव्य, बिनौले सूखे, जौ, बकरी के रोम और मोर शिखा यह सब लेकर एकत्र कर मिलाले ।।७।।

सुपिष्टो वत्समूत्रेण मृद्भाण्डे धारयेद् बुधः ।
एतच्छ्री शैववद्धू पधूपितोन्मत्तरोगिणाम् ।।८।।
ग्रहरक्षः पिशाचाद्याः पन्नगा भूतपूतनाः ।
शाकिन्येकाहिकद्वित्रिज्वराश्चातुर्थिकांतकाः ।।
नश्यन्ति क्षणमात्रेण येचान्ये विघ्नकारिणः ।।१०।।

और इन सब को बैल के मूत्र से पीसकर मिट्टी के कोरे पात्रमें रख ले, यह माहेश्वर धूप है इसे उन्मत्त रोगियों को दे तो ग्रह,राक्षस पिशाच आदि तथा नाग भूत, पूतना शाकिनी, ऐकाहिक, द्वयाहिक और त्र्याहिक, चातुर्थिक ज्वर।।६।। तथा अन्य जो जो भी विघ्नकारी रोग हैं वे सब क्षण मात्र में ही दूर हो जाते हैं ।।१०।।

गुग्गुलं लशुनं सर्पिः कचुकः कर्पिर म च ।
शिखिकुक्कुटयोर्विष्ठा मलः पारावतस्य च ।।११।।
एतद्धूपाद्ग्रहाः क्रूराः पिशाचा भूतपूतनाः ।

डाकिन्योहिज्वरारौद्रानश्यन्तिस्पर्शमात्रतः ।।

गुग्गुल, लहसन, घी, साँप की केंचली, वानर के रोम, मरो और मुर्गा पक्षी की विष्ठा तथा कबूतर की बिष्ठा। इन सबकी धूप से क्रूर ग्रह, पिशाच, भूत, पूतना, शाकिनी, ज्वर आदि रोग स्पर्श मात्र से ही नष्ट हो जाते हैं ॥१२॥

अंजनं राजकाकृष्णमरीचैर्भूत नाशनम् ।
नागरं बंकुचीनिम्बै रेतद्वा रौद्रमंजनम् ।।
सहिंगुवारिणा पीता शूकदम्बस्य मूलिका ।
शाकिनीग्रहभूतानां निग्रहं कुरुते ध्रुवम् ।।१४।।

कालीराई और कालीमिच, इन दोनों का अंजन भूतबाधा को नष्ट करता है, अथवा नागर वाकुची और नींव का अंजन नेत्रों में आँजे तो भूत ग्रह दूर भाग जाताहै ।१३। हींगके जलको और गोरखमुण्डी की जड़ को मिलाकर पीवे तो निश्चय शाकिनी, ग्रह और भूतग्रहों का विनाश हो ।।१४।।

विशालायाः फलं पक्वं हितं गोमूत्रनस्यतः ।
ब्रह्मराक्षसभूतानि पद्मं वा मरिचान्वितम् ।।१६।।
पुष्पे कूष्माण्डतोयेन निशांसम्पिष्टच्य निर्मिताम्
गुटिकांजनमात्रेण भूत ग्रहविनाशिनी ।।१६।।
ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः क्रोधेश्वराय
नमो ज्योतिः पतंगाय नमो नमः ।।
सिद्धिरूपो रुद्रो ज्ञापयति स्वाहा ।।
सप्तवारं जप्त्वा दृढ़ग्राहो विमुंचति ।।

इन्द्रवारुणी के पके हुये फल को पीसकर उसका नस्य (हुलास)

बनाले और गौमूत्र के साथ सुँघावे अथवा कमलगट्टा और कालीमिर्च इन दोनों के पिसे हुए नस्य को सुँघावे तो ब्रह्म राक्षस और भूत ग्रह सब शान्त हो जाते हैं ॥१५॥ कुम्हड़ा के फूलोंके रस में हलदीको पीस कतू गुटिका बनाकर अंजन करनेसे भूतग्रह का नाश होता ॥१६॥ 'ॐ नमो भगवते' इत्यादि मन्त्र को सात बार जपने से भूतग्रह छूट जाताहै

सद्योजातस्तथा घोरो रुद्रोमनसि संस्थितः ।
ज्वरं निहन्ति जन्तूनामशेषं सिद्धवन्दितः ॥
प्रयुक्ता सौगती विद्या लिखिता वटपल्लवे ।
पावकेन ज्वरंघोरंहन्ति तस्यावलोकनात् ॥१८॥

सद्योजात० इत्यादि मन्त्र जो शुल्क यजुर्वेद की रुद्राष्टाध्यायी में लिखा हुआ है, उसके तथा अघोर मंत्र के मानसिक जप करने से प्राणियों के सब ज्वरों का विनाश हो जाता है, शिवजी का यह मन्त्र सब सिद्धों से वन्दित है ॥१७॥ और बट वृक्ष के पत्ते पर कोयले से लिखकर दोनों मन्त्रों से विद्या प्रयुक्त की जाय तो उस पत्र के देखने मात्र से ही घोर ज्वर का नाश होता है ॥१८॥

लिखित्वा दक्षिणे बाहौ बद्ध वा नित्यज्वरापहम्
अष्टोत्तरशतंजप्त्वा मंत्रं त्रैपादिकज्वरे ॥
ज्वरग्रस्ताय तंतद्यादाचार्यो ज्वरशान्तये ॥१९॥
मंत्रः—ॐनमो भगवते रुद्राय शूलपाणये ।
पिशाचाधिपतये आवेशय कृष्णपिंगल फट्
स्वाहा ॥ अनेन ज्वरमावेशयति ॥२०॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय छिन्धि ज्वरस्य
ज्वरोज्वलितकरालशूलपाणयेहुंःफट् स्वाहा ॥

एष निग्रह करोति ॥२१॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय भूताधिपतयेहुँफट्स्वाहा ॥

सर्वज्वराउपशाभ्यंति ॥२२॥

पूर्वोक्त दोनों मन्त्रों की जो कोयले से लिखने की विधि बटपत्र पर कही है उसे लिखकर दाहिनी भुजा पर बाँधे तो नित्य आने वाला ज्वर शान्त हो जाता है और पूर्वोक्त मन्त्र लिखित उस वटपत्र को उन दोनों मन्त्रों के १०८ बार जप से अभिमन्त्रित करके आचार्य ज्वर ग्रस्त पुरुष की दक्षिण वाहु में बाँध दे तो त्रैपादिक ज्वर शान्त हो जाता है ॥११ । मन्त्र ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये' इत्यादि से शरीर में ज्वर आवेश होता है ॥१०॥ 'ॐ नमो भगवते रुद्राय छिन्दि छिन्दि' इत्यादि मन्त्र साधारण ज्वर को दूर करता है और 'ॐ नमो भगवते भूताधिपतये' इत्यादि मन्त्र सम्पूर्ण ज्वरों को शान्त करता है।

अथोन्मत्तीकरणम्

अलं कनकबीजानि धूर्तचूर्णसमन्ततः ।
गृहंचेटकविष्ठां तु तथा बीजकरंजकम् ॥२३॥
एतदुन्मत्तकं चूर्ण भक्षणात्तत्क्षणाद्व्रजेत् ।
एकविंशतिवारन्तु अभिमंत्र्य प्रयत्नतः ॥२४॥
खाने पाने प्रदातव्यं तदोन्मत्तो भविष्यति ।

मंत्रस्तु—ॐ नमो भगवती गृही गृही वाराही सुभगे ठः ठः । घृतगुग्गुल, धूपेन सुस्थो भवति नान्यथा ॥२५॥

अब उन्मत्त करने का प्रयोग लिखते हैं कि—धतूरे का बीज, लोहकिट्टका कूर्ण और गंगोटा की विष्टा, तथा कंजी के बीज ॥२३॥

इन सब को बराबर लेकर और इनका चूर्ण बनाकर खाने से मनुष्य उसी समय उन्मत्त हो जाताहै, किन्तु इसे मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित करके प्रयत्न पूर्वक ।।२४।। खाने पीने की चीज में डालकर दे तो उन्मत्त होगा ।। मन्त्र ।। (ॐ नमो भगवती गृही गृही वाराही सुभगे ठः ठः) तथा उसको घी और गुग्गुल को धूप दे दी जाय तो ज्वरग्रस्त वह स्वस्थ हो जाता है इसमें अन्यथा नहीं ।।२५।।

अथ विस्फोटीकरणम्

अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि योगं परमदुर्लभम् ।
शत्रुणामपकाराय यथा मम प्रकाशितम् ।।२६।।
येन योजितमात्रेण शत्रुदेहे समन्ततः ।
विस्फोटकाश्चजायन्तेघोराःशत्रुविनाशकाः ।।२७।।

अब विस्फोटीकरण कहते हैं, शिवजी बोले कि—अबमैं बैरियों के अपकार निमित्त यथायोग्य रीति से प्रकाशित करके वर्णन करता हूँ ।।२६।। जिस योग के करने मात्र से बैरी के सब शरीरमें शत्रु विनाशक भयंकर विस्फोट (फोड़ा, फुन्सी आदि) हो जाते हैं ।।२७।।

कीकटं भ्रमरं चापि कृष्णवृश्चिकमेव च ।
मूषिकस्य शिरो ग्राह्यं मर्कटस्य तथैव च ।।२८।।
कृत्वैकत्र समानानि पाषाणे च विचूर्णयेत् ।
यमदण्डसमं चूर्णं दुर्निवारं सुरैरपि ।
योजयेच्छत्रुसंघाते वस्त्रे शय्यासुयत्नतः ।।२९।।
विस्फोटाः सर्वगात्रेषु जायन्तेऽतिभयावहाः ।
पीडया सप्तरात्रेण म्रियते नात्र संशयः ।।३०।।

साँप, भौंरा, कालाबीछू मूषक इन सबों का तथा बानर का

सिर ।।२८।। ये सब सम भाग ले और पत्थर पर इनका चूर्ण करे यह चूर्ण यमदण्ड के समान है देवता भी इसके निवारण करने में समर्थ नहीं हो सकते। शत्रु के समुदाय में शत्रु की शय्या पर तथा वस्त्रों पर इसे युक्ति पूर्वक डाल दे ।।२९।। तो उन वस्त्रों के धारण करने से संपूर्ण अगों में अत्यन्त भयदायक फोड़ी फुन्सी उत्पन्न हों और अतिक्लेश पाकर निस्सन्देह सात दिन में मर जायगा ।।३०।।

तथाच

नीलोत्पलं सकुमुदं तथा वै रक्तचन्दनम् ।
कुक्कुटीपित्तसंयुक्तं पेषयित्वा प्रयत्नतः ।।३१।।
तदा लेपनमात्रेण सद्यःसम्पद्यते सुखम् ।।३२।।

नीलकमल, लालकमल और सफेदकमल, तथा लालचन्दन इन सबको मुर्गी के पित्त में मिलाकर पीस ले, और जब अच्छी तरह पिस जाँय ।।३१।। तब उसका लेप करे तो वह सुखको प्राप्त हो और उसके फोड़ा आदि सब नष्ट हो जायँ ।।३२।।

अथ कुष्ठीकरणम्

अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि कुष्ठीकरणमुत्तमम् ।
येन योजितमात्रेण कुष्ठीभवति नान्यथा ।।३३।।
भल्लातकरसं गुञ्जां तथा वै मंडुकादिकाः ।
गृहगोधीसमायुक्तां खाने पाने च दापयेत् ।।३४।।
सप्ताहाजायते कुष्ठं तीव्रपीडासमन्वितम् ।
एतस्य प्रशमंवक्ष्ये तथा मम प्रकाशितम् ।।३५।।

अब अन्य उत्तम कुष्टीकरण प्रयोग कहता हूँ, जिसके कि करने मात्र से ही मनुष्य कुष्टी हो जाता है इसमें अन्यथा नहीं जानना

॥३३॥ भिलाये का रस, घुन्घुची, मेंढक और गृहगोधी (छिपकली) मिलाकर खान पान में देने से ॥३४॥ सात दिन में अति पीड़ा युक्त कुष्ठ रोग हो जाता है ॥३५॥

धात्री खदिरनिम्बानि शर्करासहितानि च ।
विचूर्ण्य मधुसर्पिभ्यांजीर्णान्नेन प्रदापयेत् ॥३६॥
शालिभक्तं पटोलं च तथा शीघ्रविपाचितम् ।
एतेन दत्तमात्रेण नरः सम्पद्यत सुखी ॥३७॥

अब इसकी शान्ति का उपाय का वर्णन करता हूँ जैसा कि मैंने प्रकाशित किया है ॥३५॥ आंवला, खैर, नींब, शक्कर इनके चूर्ण को शहद और घी में मिलाकर पुराने चावलों के भात के साथ खाने के लिये दे ॥३७॥ और पथ्य में शीघ्र पचने वाले भात, परवल आदि खाने को दे तो पुरुष सुखी हो जाता है ॥३७॥

अथ माक्षिकानिवारणम्

तक्रपिष्टेन तालेन लेपयेत्पुत्रिकाकुतिम् ।
तामाघ्राय गृहाद्यांति मक्षिका नात्र संशयः ॥३८॥

अब घर से मक्खिओं के निकालने का यत्न वर्णन करते हैं कि-छाछ के साथ हरताल को पीस कर मिट्टी आदि की बनाई हुई एक पुतली में लेप करके घर में रखदे तो उसको सूंघकर मक्खी घर से भाग जाती हैं और फिर नहीं आतीं इसमें संशय नहीं जानना ॥३८॥

अथ मूषकनिवारणम्

श्वेतार्कदुग्धं कुल्माषास्तिलचूर्णं तथैव च ।
अर्कपत्रेषु न्यस्तानि मूषकान्तकराणि च ॥३९॥

सफेद आक का दूध, कुलथी, तिलों का चूर्ण इन सब को आक के पत्ते पर रखने से घर मेंसे सब मूषक भाग जाते हैं ॥३९॥

तालकंछागविण्मूत्रं सपलांडुं च पेषयेत् ।
आलिप्य मूषकं तेन जीवितं च विसर्जयेत् ॥४०
तं दृष्ट्वाऽथगृहं त्यक्त्वा पलायंतेहि कौतुकं ।
मार्जारस्य मलंतालंपिष्ट्वामूषिकमालिपेत् ॥४१
तमाघ्रायगृहं त्यक्त्वासद्योनिर्यान्तिमूषिकाः ।

हरताल छाग (बकरा) की लेंडी और मूत्र इनको प्याज
साथ पीसकर एक मूसे को पकड़कर लेप करके जीता छोड़ दे ।
उसको देखकर घरसे अन्य चूहे कौतुक पूर्वक भाग जातेहैं तथा बि
की बीट और हरताल पीसकर मूसे पर लपेट दे ॥४१॥ तो उ
सूंघकर चूहे घर छोड़करभाग जाते हैं ॥

मत्कुण (खटमल) निवारणम्

अर्कतूलमयीं वर्तिभावयेत्तापकेन च ।
दीपयेत्कटुतैलेन निश्शेषा यांति मत्कुणाः ॥४२
अर्जुनस्य फलं पुष्पं लाक्षा श्रीवासगुग्गुलम् ।
श्वेतापराजितामूलं भल्लातकविडंगकम् । ४३

आक के डोंडा के कपास की बत्ती को कड़वे तेल के दीप
जलावे, तो खटमल दूर हो जाते हैं, इसमें महाबर की भावना
देना आवश्यक है ॥४२॥ अर्जुन वृक्ष के फल और लाख, सफेद
गूगल, सफेद अपराजिता की जड़, भिलावा, बायविडंग ॥४३॥

धूपः सर्जरसोपेतः प्रदेयो गृहमध्यतः ।
सर्पाश्चमत्कुणा मूषागंधाद्यान्ति दिशो दश ॥४४

और रालइनसबको चूर्ण करले और उस धूप को घर में दे
इसकी गन्ध से साँप, खटमल और मूसे चारों ओर भाग जाते हैं।

अथ सर्पादिनिवारणम्

गुडश्रीवासभल्लातबिडंगत्रिफलायुतः ॥
लाक्षार्कपुष्पयुक्तश्च धूपो वृश्चिकसर्पहृत् ॥४५॥

गुड़, सफेद चन्दन, भिलावा, वायविडंग त्रिफला (हर्र, बहेड़ा, आंवला) लाख का रस, आक का फूल, इनकी धूप देने से घर में बीछू और साँप नहीं रहते ॥४५॥

मुस्तासिद्धार्थभल्लातकपिकच्छुफलं गुडः ।
चूर्णं भानुफलोपेतं दहेत्सर्जरसैः समम् ॥४६॥
मत्कुणा मशकास्सर्पा मूषका विषकंटिकाः ।
पलायन्ते गृहंत्यक्त्वा यथा युद्धेषु कातराः ॥४७॥

मोथा, सरसों, भिलावा केवाचके फल, गुड़ और आकके फल ॥४६॥ राल के साथ धूप देने से खटमल, मच्छर सर्प, मूसक विष के कीड़ा ये सब घर छोड़कर भाग जाते हैंजैसे कि कायर मनुष्य युद्धछोड़ कर भाग जाते हैं ॥४७॥

अथ मशकनिवारणम्

भल्लातकविडंगानि विश्वकं पुष्करं तथा ।
जम्बुलोमशकं हन्ति धूपस्तुगृहमध्यतः ॥४८॥

अब मच्छरों के निवारण का यत्न लिखते हैं कि बहेड़ा, बायविडग, सोंठ, पोहकरमूल तथा जम्बू इन सबके चूर्णकी धूप देनेसे घर से मच्छर भाग जाते हैं ॥४८॥

अथ क्षेत्रोपद्रवनाशनम्

अथ क्षेत्रस्य सस्यानां सर्पोपद्रवनाशनम् ।
बालुकाश्वेतसिद्धार्थान् प्रक्षिपेत्क्षेत्रमध्यतः ॥

शलभःसर्पकीटाश्चबराहा मृगमूषिकाः ।
मशकास्तत्रनोयांति मंत्रविद्याप्रभावतः ॥५०॥
पूर्वाषाढाख्यनक्षत्रेतु बन्दाम्बिभीतवृक्षजाम् ।
सस्यमध्ये क्षिपेत्तेनसस्यबृद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥५१॥
मंत्रस्तु—ॐ नमः सुरेभ्यः वलज उपरिपरिमिलि स्वाहा ॥ इत्यनेनायुतजपात्सिद्धिः ॥

अब खेत सम्बन्धी उपद्रवों के नाशके लिए यत्न लिखते हैं, बा और सफेद सरसों ये दोनों मिलाकर खेत में डाल दे ।४९॥ तो टीड़ी साँप, कीड़ा, सुअर, हिरण, मूसे, मच्छर ये सब उसखेतमें मंत्रविद्याके प्रभाव से नहीं आते ॥५०॥पूर्वाषाढा नक्षत्रमें वहेडे का बांदा लाकरखेत के बीजमें डाल देने से धान्य की वृद्धि होती है॥५१॥ 'ॐनम' इत्यादि मन्त्र है, इस मन्त्र को पहिले दशहजार बार जपकर सिद्ध करले ॥

अथ रक्तनिवारणम्

शैलूचत्वङ मिश्रिततंडुलानां विधाय पिष्टं विनियोजनीयम् । कन्दर्पगेहे मृगलोचनाया रक्तं निहंत्याशु हठेने योगः ॥५२॥

लिसोड़े की छाल और साठी के चावल इन दोनों को पीसकर उस पोटली को स्त्री की भग में रखदे तो बहते हुए रक्त का वेग शीघ्र रुक जाता है ॥५२॥

धात्री च पथ्या च रसांजनं च । कृत्वा विचूर्णं सजलंनिपीतम् ॥ अत्यन्त रक्तोत्थितमुग्रवेगं निवारयेत्सेतुरिवाम्बुपूरम् ॥५३॥

आँवला, हर्ड और निसोत इन सबका चूर्ण जल के साथ पान

करने से स्त्री के वहते हुए रक्त के बहुत उग्र वेग को भी इस प्रकार रोक देता है जैसे कि वहते हुये जल को बाँध रोक देता है ।।५३।।

मूलं तु शरपुंखायाः पेषयेत्तन्दुलोदकैः ।।
पाययेत्कर्षमात्रं तु बहुरक्तप्रशान्तये ।।५४।।

सरफोंका की जड़ चांवलों के जल में पीसकर कर्ष मात्रा (१० माशा) पीने से वहता हुआ अधिक रक्त भी रुक जाता है ।।५४।।

दार्वीरसांजनवृषाद्वकिराततविल्व भल्लातकैरथ कृतो मधुना कषायः । पीतो जयत्यतिबलं प्रदरं सशूलं पीतं सितारुणविलोहितनीलकृष्णम् ।

देवदारु रसाञ्जन,रसौत, चिरायता, वेल भिलावा (अडूसा और नागरमोथा)इन सबको गाढ़ा करकेघी और शहद के साथपीवेतो शूल सहितपात,श्वेत,लाल, नील, कृष्ण सब प्रकारके प्रदर शान्त हों ।

अथ वन्ध्यात्वदोषनाशनम्

समूलपत्रां सर्पाक्षीं रविवारे समुद्धरेत् ।
एकवर्णगवां क्षीरेकन्याहस्तेन पेषयेत् ।।५६।।
ऋतुकाले पिबेद्वन्ध्या पलार्द्धं तद्दिने दिने ।
क्षीरशाल्यन्नमुद्गं च लघ्वाहारं प्रदापयेत ।।५७।।
एवं सप्तदिनं कुर्याद्वन्ध्या भवति गर्भिणी ।

अब बन्ध्या के दोषों का निवारण करने का यत्न वर्णन करते हैं कि—सुगंध रास्ना की जड़ पत्तों समेत रविवार के दिन उखाड़ लावे और उसको एक रंग वाली गौ के दूध में कन्या के हाथ से पिसवावे ।।५६।। और उसको बन्ध्या स्त्री प्रति दिन दो-दो पल पीवे और दूध,शालीधान्य,मूँग आदि हलका भोजन करे ।।५७।। तो इस प्रकार सात दिन करने से वह गर्भिणी हो जाती है ।

उद्वेगं भयशोकौ च दिवानिद्रां विवर्जयेत् ।
न कर्म कारयेत्किंचिद्वर्जयेच्छीतमातपम् ।।५८।।
न तथा परमां सेवां कारयेत्पूर्ववत्क्रियाम् ।
पतिसंगद्गार्डलाभा नात्रकार्या विचारणा ।।५९।।

पूर्वोक्त औषधि के सेवन करनेमें उद्वेग, शोक और दिन मेंसोना त्याग दे और अधिक परिश्रम का कोई काम नहीं करे। ठंडी और गर्म चीज खाना छोड़ दे ।५८।। किसी की अधिक सेवा न करे और पूर्ववत् क्रिया न करे तो पति के प्रसंग से गर्भ लाभ होता है, इसमें सन्देह के लिये विचार नहीं है ।।५९।।

मुस्तां प्रियंगु सौवीरंलाक्षांक्षौद्रसमं पिबेत् ।
कर्षतन्दुलतोयेन बन्ध्या भवति पुत्रिणी ।।६०।।
पथ्यमुक्तं यथापूर्वन्तद्वत्सप्तदिनं पिबेत् ।।

मोथा, कांगनी, बेर, लाख, इनको समान भाग लेकर चावलों के जल के संग एक कर्ष प्रमाण पीवे वन्ध्या स्त्री पुत्रवती हो ।।६०।। जिस प्रकार पहले कहे हैं वैसे ही पथ्यों से रहे और सातदिनतक पीवे ।

सपिप्पली केशरशृंगवेर क्षुद्रोषण गव्यघृतेनपीतम् ।
वन्ध्यापि पुत्रं लभते हठेन योगस्तु सोऽयं विधिना मयोक्तः ।।६१।।

पीपल, केशर, अदरख छोटी गोलमिर्च ये सब गौ के घी के साथ पीनेसे बन्ध्या भी पुत्र पातीहै, यह योग मैंने विधि पूर्वक कहा है ।६१।

मूलं शिफायाश्चहि लक्ष्मणाया, ऋतौ निपीय त्रिदिनं पयोभिः क्षीरान्नचर्या नियमेन भुंक्ते, पुत्रं प्रसूते वनिता न चित्रम् ।।६२।।

सफेद कटेरी की और जटामांसी की जड़ को बन्ध्या स्त्री ऋतु
ल में तीन दिन पीवे, और दिन में दूध आदि हलका भोजन करेतो
के पुत्र होता है, इसमें विचित्रता नहीं है ॥६२॥

रंगगंधाघृतवारिसिद्धि-माज्यंपयः स्नानदिने च
त्वा । प्राप्नोति गर्भं नियमं चरन्ती वंध्या च
तं पुरुषसंगात् ॥६३॥

असगन्ध को जल में औटा कर घी में पकावे और घी व दूध
साथ स्नान के दिन पीवे और नियम पूर्वक रहे,तो बन्ध्या स्त्री पति
ंग से पुत्रवती होती है ॥६३॥

ष्णापराजिता मूलं बस्तक्षीरेण संपिवेत् ।
ऋतुस्नातात्रिघस्त्रं तुवन्ध्यागर्भधराभवेत् ॥६४॥

काली विष्णुकान्ता की जड़ को दूध में पीसकर ऋतु स्नान के
द तीन दिन तक पीवे तो बन्ध्या स्त्री गर्भ धारण करती है ॥६४॥

ागकेशरकं चूर्णं नूतनोतद्ध दुग्धतः ।
पिवेत्सप्तदिनं दुग्धं घृतैर्भोजनमाचरेत् ॥
ऋतौ लभते गर्भं सा नारी पतिसंगता ॥

नागकेशर के चूर्ण को हाल के दुहे गोदुग्ध के साथ सात दिन
क पीवे और दूध घी अधिक खाय ॥६५॥ तो पति के सङ्ग से वह
ी गर्भ धारण करे ।

तिलरसगुड़मेकं गोपुरीषाग्नियोगात्तरुणवृषभमूत्रं
प्रस्थयुक्तं विपक्वम् ॥ ऋतुदिवसविमध्ये सप्तवारं
च पीतं। जनयति सुतमेतन्त्रिशिचतं पुष्पितेव ।६६।

तिल, रस, गुड़ और तरुण अवस्था वाले बैल का एक सेर भर
त्र इन सबको गौ के गोबर के ऊपराओं की आँचसे पकावे और फिर

इसको ऋतुस्नान के दिनों में सातवार पीवे तो अवश्य ही वह स्त्री पुष्पिता के समान पुत्र जनती है, इसमें संशय नहीं ।।६६।।

कदम्बपत्रं श्वेतं च बृहतीमूलमेव च ।
एतानिसमभागानि ह्यजाक्षीरेण पेषयेत् ।।६७।।
त्रिरात्रं पंचरात्रं वा पिवेदेतन्महोषधम् ।
ऋतो निपीयमाने तु गर्भो भवतिनिश्चतम् ।।६८।।

कदम्ब के पत्ते, सफेद चन्दन, कटेली जड़, इन सबको समान लेकर बकरी के दूध में पीसे ।।६७।। और तीन रात्रि अथवा पांचरात्रि तक इस महौषधि को ऋतुकालके समय पीवे तो अवश्य गर्भ धारणहो

विष्णुक्रान्तां समूलां तु पिष्ट्वा दुग्धैस्तुमाहिषैः ।
महिषीनवनीतेन ऋतुकाले तुभक्षयेत ।।६९।।
एवं सप्तदिनं कुर्यात्पथ्यमुक्तं च पूर्ववत् ।
गर्भंसा लभते नारी काकबन्ध्या सुशोभनम् ।।७०।।

जड़ समेत विष्णूक्रान्ता को भैंस के दूध में पीसकर भस के मक्खन के साथ ऋतुकाल के समय सात दिन तक लगातार सेवन करे ।।६९।। और पथ्य से रहे तो काकबन्ध्या स्त्री भी गर्भवती होती है ।

गर्भे संजातमात्रे तु पक्षान्मासाच्च वत्सरात ।
म्रियते द्वित्रिबर्षाद्वौयस्याः सामृतवत्सक ।।७१।।

अब मृतवत्सा की चिकित्सा कहते हैं कि—जिस स्त्री के बालक उत्पन्न होकर हाल ही पक्ष अथवा महीना वा एक वर्ष अथवा दो तीन वर्ष में मर जाता है उसे मृतवत्सा कहते हैं ।।७१।।

प्राङ मुखाकृतिकर्क्षेतु बन्ध्या कर्कोटकीं हरेत् ।
तत्कंदं पेषयेत्तोयैः कर्षमात्रं सदा पिवेत् ।।७२।।

ऋतुकालेतुसप्ताहं दीर्घजीवी सुतोभवेत् ॥७३॥

कृतिका नक्षत्र में पूर्व मुख करके बन्ध्या स्त्री कर्कोटकी (पीत पुष्पा) को लावे और उसकी जड़ को लेकर जल में पीसकर एक कर्ष (१० माशे) सदा पीवे ॥७२॥ और ऋतुकाल में सात दिन पीवे तो दीर्घजीवी पुत्र उत्पन्न हो ॥७३॥

या बीजपूरद्रुममूलमेकं क्षीरेण सिद्धं हविषा विमिश्रम् ऋतौ तु पीत्वा स्वपतिम्प्रयाति दीर्घायुषं सा तनयं प्रसूते ॥७४॥

बीजपूर (नीबू) की जड़ एक कर्ष (१० मासे) लेकर दूध में पकावे और हविष अन्न मिलाकर ऋतुकाल में पीकर पति के समीप जाय तो उसके चिरंजीवी पुत्र उत्पन्न हो ॥७४॥

अकस्मात्प्रथमे मासि गर्भे भवति वेदना ।
गोक्षीरैः पेषयेत्तुल्यं पद्मकोशीरचन्दनम् ॥७५॥

अब गर्भ गिर जाने की रक्षा अर्थात् गर्भ स्तम्भन विधि का वर्णन करते हैं। अकस्मात् पहिले महिने में यदि गर्भ में पोड़ा हो तो पद्मक, खस लाल चन्दन इन सबको गाय के दूध में समान भाग लेकर पीसे।

पलमात्रं पिबेन्नारीत्र्यहाद्गर्भःस्थिरो भवेत् ।
अथवा मधुकं दारु शाकबृक्षस्य बीजकम् ।
सम्पिष्य क्षीरकाकोलींपिबेत्क्षीरैस्तु गोभवैः ॥७६॥

और इनको गर्भिणी स्त्री तीन दिन एक-एक पल प्रमाण पीवे तो गर्भ स्थिर होता है। अथवा मुलहठी, देवदारु, सिरस वृक्ष के बीज क्षीरकाकोली इन सबको गौ के दूधमें पीसकर पीवेतो गर्भकी रक्षाहो

नीलोत्पलं मृणालं च यष्टि कर्कटभृंगिकां ।
गोक्षीरैस्तु द्वितीये च पीत्वा शाम्यतिवेदना ॥७७॥

नीलकमल की जड़ और मुलहटी, काकड़ासिंगी इन सबको समान भाग में पीसकर और गौ के दूध के साथ मिलाकर पीवे तो दूसरे महीने की गर्भ पीड़ा दूर हो जाती है ॥७७॥

अथवाश्ववत्थल्कंच तिलंकृष्णशतावरीम् ।
मंज्जिष्ठासहितां पिष्ट्वापिवेत्क्षीरैश्चतुर्गुणैः ।७८।

या पीपल की छाल, काले तिल, शतावरी, मजीठ इनको समभाग लेकर पीसे और चौगुने दूध के सङ्ग पीवे तो दूसरे मास की गर्भ वेदना दूर हो ॥७८॥

श्रीखण्डं तगरं कुष्ठं मृणालं पद्मकेशरम् ।
पिवेच्छीतोदकैः पिष्टं तृतीये वेदनावती ।
अथवाक्षीरकाकोलीं बलांपिष्ट्वापयःपिवेत् ॥७९॥

चन्दन, तगर, कूठ, कमल की जड़, कमल केशर इनको ठण्डे जल के साथ पीवे. तो तीसरे मांस की गर्भ वेदना शांत होतीहै अथवा क्षीरकाकोली और सुगन्ध बाला को जल के साथ पीवे तो तृतीय मास की वेदना दूर हो ॥७९॥

नीलोत्पलंमृणालानि गोक्षुरं च कशेरुकम् ।
तुर्य्यमासे गवां क्षीरैः पिवेच्छाम्यतिवेदना ॥८०॥

नीलोत्पल, कमल की जड़,गोखरू,कसेरू इनको पीसकर गायके दूधके साथ पीनेसे चौथे महीने की पीड़ा शान्त हो जाती है ॥८०॥

पुनर्नवाञ्च काकोलीं तगरं नीलमुत्पलम् ।
गोक्षुरं पंचमे मासे गर्भक्लेशहरं पिवेत् ॥८१॥

पुनर्नवा, काँकोली, तगर, नीलकमल, गोखरू इन औषधियोंको गौ के दूध के साथ पीवे तो पाँचवे मास की गर्भ पीड़ा दूर होती है।

सितां कपित्थमज्जां च शीततोयेन पेषयेत् ।

षष्ठे मासि गवांक्षीरैः पिबेत्क्लेशनिवृत्तये ॥८२॥

मिश्री और कैथ की गुदीको शीतल जल के साथ पीसे और गौ के दूध के साथ पीवे तो छटे महीने का गर्भ पीड़ा निवृत हो ॥८२॥

कशेरुं पौष्करं मूलं शृंगाटं नीलमत्पलम् ।
पिष्ट्वाचसप्तमेमासिक्षीरैःपीत्वाप्रशाप्यति ॥८३॥

कसेरू,पुहकरमूल, सिंघाड़ा और नीलकमल इनको पीसकर सातवें मास की गर्भ वदना शांति के अर्थ गौ के दूध के साथ पीवे ॥८३॥

यष्टीं पद्माक्षकं मुस्तं केशरं गजपिप्पलीं ।
नीलोत्पलं गवांक्षीरैः पिबेदष्टममासके ॥८४॥

मुलहटी, पद्माख, केशर, गजपीपल, नीलोत्पल इन सबके चूर्ण को गौ के दूध के साथ सेवन करे, तो आठवें महीने की गर्भ पीड़ा दूर हो जाती है ॥८४॥

विशालाबीजकंकोलं मधुना सह पेषयेत् ।
वेदनानवमेमासिशांति माप्नोतिनान्यथा ॥

इन्द्रायन के बीज और क्षीरकाकोली (शीतलचीनी) को शहद के साथ पीवे तो नवम मास की गर्भ वेदना शान्त हो जाती है, यह अन्यथा नहीं है ॥८५॥

शर्करा गोस्तनी द्राक्षा सक्षौद्रं नीलमुत्पलम् ।
पाययेद्दशमे मासि गवांक्षीरैः प्रशान्तये ॥८६॥
अथवा शुंठिसंसिद्धं गोक्षीरं दशमे पिबेत् ।
अथवा मधुकं दारु शुंठीं क्षीरेण संपिबेत् ॥८७॥

मिश्री, मुनक्का, दाख, शहद, नीलकमल इन सब औषधियोंको गौ के दध के साथ पीवे तो दशम मास को गर्भ वेदना शान्त हो ८६

अथवा सोंठसे सिद्ध किया हुआ गौ का दूध दसवें मास में पीवे अथवा मुलहटी,देवदारु और सोंठ को गौ के दूध के सङ्ग पीवे ॥८७॥

धात्र्यंजनं सावरयष्टिकाख्यं । क्षीरैर्निपीतं प्रमदा हटेन ॥ सप्ताहमात्रं विनियुज्यनारी । स्तभ्नाति गर्भं चलितं न चित्रम् ॥८८॥

आंवला, सोवीराजन, लोध, मुलहटी इन सबको गौ दुग्धकेसाथ सात दिन तक लगातार जो स्त्री पीले उसका चलायमान गर्भ भी रुक जाता है इसमें आश्चर्य नहीं। रसौंत,लोध,धनियाँ और मुलहटीका भी पान करना आयुर्वेद ग्रन्थों में देखा जाता है ॥८८॥

कुलालहस्तोद्भवकर्दमं च । वत्सीपयः क्षौद्रयुतेन पीत्वा ॥ गर्भच्युतिं शूलमयीं निवीर्यं । करोति गर्भं प्रकृत हठेन ॥८९॥

पात्र बनाते समय चाक पर कुम्हार के हाथ में जो पतली मिट्टी लग जाती है, उसे बकरी के दूध में डालकर शहद के सङ्ग पान करे तो यह योग दर्द सहित गिरते हुये गर्भ को स्थिर कर देता है ॥८९॥

कशेरुभृंगाटकजीरकाणि । पयोघनैरंडशताव-रीभिः ॥ सिद्धं पयश्शर्करया विमिश्रं । संस्थापये-द्गर्भमुदस्य शूलम् ॥९०॥

कसेरू, सिघाड़ा, जीरा, नागरमोथा एरंड और शतावरी इन सबको जलमें औटाकर और उसमें जल तथा मिश्री डालकर पीवे तो यह क्वाथ दर्द को दूर करके गर्भ को रोक देता है ।.९०॥

कन्दं कौमुदकस्य माक्षिकयुतं क्षीराज्यमिश्रं पिवेत्। तसप्ताहसितया सुपक्वसबलाशीतीकृतंवायुना।

गर्भस्रा वमरोचक सपवनं शोफ त्रिदोषंर्वमिं ।
शूलसर्वविधंनिहन्ति नियमादेवं च यत्तत्स्मृतम् ॥

कुमुदका कन्द, शहद, घी और दूध इनको मिलाकर तथा इन में मिश्री डालकर ठंडा करके सात दिन तक पीवे तो गर्भस्राव अरोचक वात रोग सूजन, त्रिदोष, वमचमाहट और शूल ये सब रोग नियम पूर्वक औषध सेवन करने से नष्ट हो जाते हैं ॥९१॥

कुवलयकन्दंसतिलपीत्वाक्षीरेणमधुसितायुक्तम् ।
गुरुतरदोषैश्चलितं गर्भं संस्थापयेदाशु ॥९२॥

कमलकन्द और काले तिलों को शहद मिश्री और दूध के साथ पीने से महादोषों से गिरता हुआ गर्भ भी शीघ्र रुक जाता है ॥९२॥

ह्रीबेरातिविषा मुस्ता मरितं संभृतं जलम् ।
दद्यादग्भें प्रचलिते प्रदरे कुक्षिशूलके ॥९३॥

ह्रीबेर, अतीसा मोथा, मिर्च, मोचरस कुटज इन का काढा देने से चलित गर्भरुक जाताहै तथा प्रदर और कुक्षि शूलरोग नष्टहोजातेहैं

अथ गर्भशुष्कनिवारणम्

गोक्षीरं शर्करायुक्तं गर्भशुष्कप्रशांतये ।
पिवेद्वा मधुकं चूर्णं गंभारीफलचूर्णकम् ॥
समांशं गव्यदुग्धेन गुर्विण्या हि प्रशांतये ॥९४॥

अब गर्भ शुष्कनिवारणयत्न कहते हैं कि गाय के दूध में शक्कर मिलाकर पीनेसे सूखे गर्भ की पुष्टि होती है, अथवा गँभारी के फलका चूर्ण वा मुलहटी का चूर्ण ये दोनों बराबर लेकर गौ के दूध के साथ पोले तो गर्भ की रक्षा हो ॥९४॥

अथ सुखप्रसवमाह

श्वेतं पुनर्नवामूलं चूर्णं योनौ प्रवेशयेत् ।
क्षणात्प्रसूयते नारी गर्भेणातिप्रपीडिता ॥९५॥

जिस गर्भिणी स्त्री को पुत्रादिकी उत्पत्ति के समय पीड़ा हो तो उसको सुख पूर्वक बालक उत्पत्ति होनेका यत्न वर्णन करते हैं—सफेद पुनर्नवाकी जड़ का चूर्ण स्त्री की योनि में प्रवेश करे तो शीघ्र प्रसव होता है और गर्भवेदना भी नहीं होती ॥९५॥

दशमूलीशृतं तोयं घृतसैंधवसंयुतम् ।
शूलातुरा पिबेन्नारी सा सुखेन प्रसूयते ॥९६॥

दशमूल के काढे को घी और सेंधे नमक के साथ मिलाकरपीवे तो शूलवती स्त्री सुखपूर्वक बालक जनती है ॥९६॥

ॐ मन्मथ, ॐ मन्मथ; ॐ मन्मथ मन्मथवा हिनि लम्बोदर मुंच मुंच स्वाहा ॥ अनेन मंत्रेण जलं सुतप्तं पातुं प्रदेयं शुचिना नरेण ॥ तोयाभिपाना-त्खलु गर्भवत्या प्रसूयते शीघ्रतरं सुखेन ॥

'ॐ मन्मथ'— इत्यादि मन्त्र से पवित्रता पूर्वक गरम जल को अभिमन्त्रित करके स्त्री को पिलावे तो इस जल के पीने से गर्भिणी स्त्री शीघ्र और सुख पूर्वक बालक जनती है ॥९७॥

अथ नष्टपुष्पायाः पुष्पकरणम्

लांगलीकन्दचूर्णं वा अपामार्गजमूलकम् ।
इन्द्रवारुणिकामूलं योनिस्थं पुष्पबन्धनम् ॥९८॥

कलिहारी कन्दका चूर्ण और चिर्चिराकीवा इन्द्रायनकी जड़इनकी पोटली बनाकर स्त्री अपनी भगमें रक्खे तो रजस्वला होने लग जातीहै

तिलमूलकषायन्तु ब्रह्मदण्डीयमूलकम् ।
यष्टीं त्रिकटुकं चूर्णं क्वाथयुक्तं च पाययेत् ।।९९।।
पुष्परोधे रक्तगुल्मे स्त्रीणां सद्यः प्रशस्यते ।

तिल के मूल का काढा गा ब्रह्मदण्डी की जड़ मुलहटी, त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपल) इनका चूर्ण खाय या इनका काढा करके पीवे ।।९८।। तो रक्त का रुकना, योनि की गांठ ये दोनों रोग दूर हों और ठीक समय पर रजस्वला होने लगे ।।९९।।

ज्योतिष्मतीकोमलपत्रमग्नौ। भ्रष्टं जपायाः कुसुमं च पिष्टम् ।। गृहाम्बुना पीतमिदं युवत्वा । करोति पुष्पं स्मरमन्दिरस्य ।।१००।।

एतत्ते कथितं वत्स तन्त्रमुड्डीशमुत्तमम् ।
यस्मै कस्मै य दातव्य रक्षणीयं प्रयत्नतः ।।१०१।।

मालकांगनी के कोमलपत्तों को अग्निमें भूनकर उनमें जपासेके फूल मिलाकर जल के साथ पीने से स्त्री का नष्ट हुआ रज पुनः जारी होने लगा जाता है।१००। शिवजी बोले कि—हे रावण ! यह उत्तम उड्डीशतन्त्र मैंने तुमसे वर्णन किया, इसे जिस किसी को न देनाकिन्तु यत्न पूर्वक सुरक्षित करके रखना ।।१०१।।

।। इति ।।

मुद्रक—जी० पी० भरतिया श्री कृष्ण पब्लिशिंग हाउस प्रेस, मथुरा

वृहद् सचित्र सुखसागर भाषा	१४)
श्रीमद्भगवद्गीता भाषा	१)५०
हारमोनियम तबला	)७५
तुलसीकृत रामायण भा० टी०	१२)
वृहद् पशुचिकित्सा बड़ी	४)
आसाम बङ्गाल का जादू	)७५
स्त्री सुबोधिनी	६)
विवाहित आनन्द	१)५०
व्यापार का खजाना	१)२५
सिलाई कटाई शिक्षा	२)
हारमोनियम तबला मास्टर	१)५०
लाठी शिक्षा	१)
वाशिष्ठी हवन पद्धति	१)
अर्क प्रकाश	३)
तुलसीकृत रामायण कलाँ	२५)
अष्टाङ्गहृदय अर्थात् वाग्भट	२०)
उड्डीश तन्त्र	१)
अकबर बीरबल बड़ा जिल्द	१)५०
हस्तविज्ञान	२)
योगवाशिष्ठ भाषा	३)
शिवपार्वती विवाह	)५०
कौतुकरत्न भाण्डागार	१)५०
श्रीबाल्मीक रामायण भाषा	१२)
रामायण ध्वनि राधेश्याम	३)
व्यंजन पाक प्रवेशिका	)५०
तुलसीकृत रामायण गुटका	६)
साबरितन्त्र सेवड़े का जादू	२)५०
पत्नी पथ प्रदर्शक	२)५०
परफ्यू मेडिका	२)५०
खजाना रोजगार	१)२५
सचित्र करामात	१)५०
व्यापार प्रकाश	)५०
पाक विज्ञान बड़ा	२)
रमल नवरत्न	३)
नारी धर्म शिक्षा	२)
दृष्टांत महासागर	२)५
रैदास रामायण	२)
वृहद् सामुद्रिक शास्त्र	४)
असली आल्हखण्ड	५)
नया फिल्म संगीत बहार	२)
रसराज सुन्दर भा० टी०	१२)
दुर्गा सहस्रनाम भा० टी०	१)
शिव सहस्रनाम भा० टी०	१)
छ० रुपये में मैट्रिक पास	६)
छ० रुपये में इण्टर पास	६)
बेसिक इंगलिश प्राइमर	)४०
नवीन बालपोथी रंगीन	)४०
सोलह सोमवार कथा	)२५
संतान सप्तमी कथा	)२५
हलषष्ठी कथा	)२५
एकादशी माहात्म्य भाषा	१)
माघ माहात्म्य भाषा	१)२५
वृहस्पतिवार कथा बड़ी	)४०
शुक्रवार व्रत कथा	)२५
दत्तात्रय तंत्र	१)
प्रेमसागर बड़ा	३)
माघ माहात्म्य भाषा टीका	३)५०

मुद्रक—जी० डी० भरतीया, श्रीकृष्ण पब्लिशिङ्ग हाऊस प्रेस, मथुरा।